

नागपूर महानगरपालिकेच्या दि. 03.02..2018 शनिवार रोजी दुपारी 12-25 वाजता राजे रघोजीराव भोसले नगर भवन, महाल येथे भरलेल्या स्थगित सर्वसाधारण सभेचे कार्यवृत्त

उपस्थित सदस्य

| अनु. क्र. | प्रभाग क्र. | अ/ब | मा. सदस्यांचे नांव | पद |
|-----------|-------------|-----|--|----------|
| 1. | 37 | क | नंदा शरद जिचकार | महापौर |
| 2. | 20 | ड | दिपराज भैय्याजी पाडीकर | उपमहापौर |
| 3. | 1 | अ | महेन्द्रप्रसाद रमेश धनविजय | सदस्य |
| 4. | 1 | ब | सुषमा संजय चौधरी | सदस्या |
| 5. | 1 | क | प्रमिला प्रितम मथरानी | सदस्या |
| 6. | 1 | ड | विरेन्द्र उर्फ विक्की घनश्यामदास कुकरेजा | सदस्य |
| 7. | 2 | अ | भावना संतोष लोणारे | सदस्या |
| 8. | 2 | ब | दिनेश बसंतलाल यादव | सदस्य |
| 9. | 2 | ड | मनोज दशरथ सांगोळे | सदस्य |
| 10. | 3 | अ | परसराम काशीनाथ मानवटकर | सदस्य |
| 11. | 3 | ब | गोपीचंद कृष्णराव कुमरे | सदस्य |
| 12. | 3 | क | भाग्यश्री गणेश कानतोडे | सदस्या |
| 13. | 3 | ड | खान नसीम बानो मो. इब्राहिम | सदस्या |
| 14. | 4 | अ | निरंजना महेश पाटील | सदस्या |
| 15. | 4 | ब | शेषराव शंकरराव गोतमारे | सदस्य |
| 16. | 4 | क | मनिषा चक्रधर अतकरे | सदस्या |
| 17. | 4 | ड | राजकुमार पुनाराम साहु | सदस्य |
| 18. | 5 | अ | दुर्गा चंद्रभुषण हत्तीठेले | सदस्या |
| 19. | 5 | ब | प्रविण विलासराव भिशीकर | सदस्य |
| 20. | 5 | क | अभिरूची अनिल राजगिरे | सदस्या |
| 21. | 5 | ड | संजय अरूणराव चावरे | सदस्य |
| 22. | 6 | ब | वंदना राजू चादेकर | सदस्या |
| 23. | 6 | क | वैशाली अविनाश नारनवरे | सदस्या |
| 24. | 6 | ड | मो. इब्राहिम तौफीक अहमद | सदस्य |
| 25. | 7 | अ | विरंका मुरलीधर भिवगडे | सदस्या |
| 26. | 7 | ब | शेख मोहम्मद जमाल मोहम्मद इब्राहीम | सदस्य |
| 27. | 7 | क | मंगला योगीराज लांजेवार | सदस्या |
| 28. | 8 | अ | आशा नेहरू उईके (आयेशा) | सदस्या |
| 29. | 8 | ब | अंसारी सय्यदा बेगम मो.निजामुद्दीन | सदस्या |
| 30. | 8 | क | जिशानमुमताज मो. इरफान अंसारी | सदस्या |
| 31. | 8 | ड | भुट्टो जुल्फेकार अहमद | सदस्य |
| 32. | 9 | अ | स्नेहा विवेक निकोसे | सदस्या |
| 33. | 9 | ब | संजय श्यामराव बुरेवार | सदस्य |

| | | | | |
|-----|----|---|---------------------------------|--------|
| 34. | 9 | क | ममता महेश सहारे | सदस्या |
| 35. | 9 | ड | नरेन्द्र नत्थुजी वालदे | सदस्य |
| 36. | 10 | ब | रश्मि निलमनी धुर्वे | सदस्या |
| 37. | 11 | अ | संदिप चंद्रभान जाधव | सदस्य |
| 38. | 11 | ब | संगीता दिपक गिन्हे | सदस्या |
| 39. | 11 | क | अर्चना विवेक पाठक | सदस्या |
| 40. | 11 | ड | भूषण कृष्णराव शिंगणे | सदस्य |
| 41. | 12 | क | हरीश मोहन ग्वालवंशी | सदस्य |
| 42. | 12 | ड | जगदीश शिवदास ग्वालवंशी | सदस्य |
| 43. | 13 | अ | अमर हरीष बागडे | सदस्य |
| 44. | 13 | ब | रूतिका योगेश मसराम | सदस्या |
| 45. | 13 | क | परिणिता परिणय फुके | सदस्या |
| 46. | 13 | ड | वर्षा जयंत ठाकरे | सदस्या |
| 47. | 14 | अ | शिल्पा ईशांत धोटे | सदस्या |
| 48. | 14 | ब | प्रमोद ताराचंद कौरती | सदस्य |
| 49. | 14 | क | कमलेश दिलीप चौधरी | सदस्य |
| 50. | 14 | ड | प्रगती अजय पाटील | सदस्या |
| 51. | 15 | अ | सुनिल दुलीचंद हिरणवार | सदस्य |
| 52. | 15 | ब | उज्वला प्रकाश शर्मा | सदस्या |
| 53. | 15 | क | रूपा शेखर राय | सदस्या |
| 54. | 15 | ड | संजय अनंत बंगाले | सदस्य |
| 55. | 16 | अ | लखन सुमेरा येरवार | सदस्य |
| 56. | 16 | ब | वनिता सुनिल दांडेकर | सदस्या |
| 57. | 16 | क | तारा (लक्ष्मी) ओमप्रकाश यादव | सदस्या |
| 58. | 16 | ड | संदीप दिवाकर जोशी | सदस्य |
| 59. | 17 | अ | विजय गोपालराव चुटेले | सदस्य |
| 60. | 17 | ब | लता सुनिल काडगाये | सदस्या |
| 61. | 17 | क | हर्षला मनोज उर्फ मोरेश्वर साबळे | सदस्या |
| 62. | 17 | ड | प्रमोद छत्रपाल चिखले | सदस्य |
| 63. | 18 | अ | प्रवीण प्रभाकर दटके | सदस्य |
| 64. | 18 | ब | सुमेधा श्रीकांत देशपांडे | सदस्या |
| 65. | 18 | क | नेहा नरेन्द्र वाघमारे | सदस्या |
| 66. | 18 | ड | ऋषिकेश (बंटी) नारायण शेळके | सदस्य |
| 67. | 19 | अ | संजयकुमार कृष्णराव बालपांडे | सदस्य |
| 68. | 19 | ब | विद्या राजेश कन्हारे | सदस्या |
| 69. | 19 | क | सरला कमलेश नायक | सदस्या |
| 70. | 19 | ड | दयाशंकर चंद्रशेखर तिवारी | सदस्य |
| 71. | 20 | अ | शकुंतला वामन पारवे | सदस्या |
| 72. | 20 | ब | यशश्री देवराम नंदनवार | सदस्या |

| | | | | |
|------|----|---|-------------------------------|--------|
| 73. | 20 | क | रमेश गणपती पुणेकर | सदस्य |
| 74. | 21 | अ | ज्योती श्रीधर भिसीकर | सदस्या |
| 75. | 21 | ब | नितीन रामभाऊ साठवणे | सदस्य |
| 76. | 21 | क | आभा विजयकुमार पांडे | सदस्या |
| 77. | 21 | ड | महेश केशवराव महाजन | सदस्य |
| 78. | 22 | अ | राजेश श्रावणजी घोडपागे | सदस्य |
| 79. | 22 | ब | वंदना वसंतराव यंगटवार | सदस्या |
| 80. | 22 | क | श्रद्धा विजय पाठक | सदस्या |
| 81. | 22 | ड | मनोज केशवराव चापले | सदस्य |
| 82. | 23 | अ | कांता राधेश्याम रागेकर | सदस्या |
| 83. | 23 | ब | मनिषा आशिष धावडे | सदस्या |
| 84. | 23 | क | नरेंद्र (बाल्या) गोविंद बोरकर | सदस्य |
| 85. | 23 | ड | दुनेश्वर सूर्यभान पेठे | सदस्य |
| 86. | 24 | अ | अनिल शौकीलाल गेंडरे | सदस्य |
| 87. | 24 | ब | सरिता ईश्वर कावरे | सदस्या |
| 88. | 24 | क | चेतना राजू टांक | सदस्या |
| 89. | 24 | ड | प्रदीप वसंतराव पोहाणे | सदस्य |
| 90. | 25 | अ | जयश्री योगेश्वर रागेकर | सदस्या |
| 91. | 25 | ब | पुरुषोत्तम नागोराव हजारे | सदस्य |
| 92. | 25 | क | वैशाली देवचंद रोहणकर | सदस्या |
| 93. | 25 | ड | दिपक मोतीरामजी वाडीभस्मे | सदस्य |
| 94. | 26 | अ | धर्मपाल नथुजी मेश्राम | सदस्य |
| 95. | 26 | ब | समीता राजेश चकोले | सदस्या |
| 96. | 26 | क | मनिषा सुनिल कोठे | सदस्या |
| 97. | 26 | ड | जितेंद्र धनराज कुकडे | सदस्य |
| 98. | 27 | अ | तानाजी सुकलाजी वनवे | सदस्य |
| 99. | 27 | ब | दिव्या दिपक धुरडे | सदस्या |
| 100. | 27 | क | वंदना राजेश भुरे | सदस्या |
| 101. | 27 | ड | हरिष सिताराम दिकोंडवार | सदस्य |
| 102. | 28 | ब | मंगलाबाई प्रशांत गवरे | सदस्या |
| 103. | 28 | क | रेखा राजु साकोरे | सदस्या |
| 104. | 28 | ड | विजय शंकरराव झलके | सदस्य |
| 105. | 29 | अ | लीला अजय हाथीबेड | सदस्या |
| 106. | 29 | ब | विद्या योगेश मडावी | सदस्या |
| 107. | 29 | क | भगवान भाऊराव मेंढे | सदस्य |
| 108. | 29 | ड | स्वाती चंद्रकांत आखतकर | सदस्या |
| 109. | 30 | अ | नागेश गोविंदराव सहारे | सदस्य |
| 110. | 30 | ब | रिता अशोक मुळे | सदस्या |
| 111. | 30 | क | स्नेहल सतीश बिहारे | सदस्या |

| | | | | |
|------|------------|---|---|--------|
| 112. | 30 | ड | संजय मधुकर महाकाळकर | सदस्य |
| 113. | 31 | अ | उषा टॉबी पॅलट | सदस्या |
| 114. | 31 | ब | सतीश विठ्ठलराव होले | सदस्य |
| 115. | 31 | क | शीतल प्रशांत कामडे | सदस्या |
| 116. | 32 | अ | अभय प्रल्हाद गोटेकर | सदस्य |
| 117. | 32 | ब | कल्पना राम कुंभलकर | सदस्या |
| 118. | 32 | क | रूपाली प्रशांतसिंह ठाकुर | सदस्या |
| 119. | 32 | ड | दिपक मारोतराव चौधरी | सदस्य |
| 120. | 33 | अ | वंदना भानुदास भगत | सदस्या |
| 121. | 33 | ब | भारती विकास बुंडे | सदस्या |
| 122. | 33 | क | विशाखा शरद बान्ते | सदस्या |
| 123. | 33 | ड | मनोजकुमार धोंडुजी गावंडे | सदस्य |
| 124. | 34 | अ | नागेश महादेव मानकर | सदस्य |
| 125. | 34 | ब | राजेन्द्र विठ्ठलराव सोनकुसरे | सदस्य |
| 126. | 34 | क | माधुरी प्रवीण ठाकरे | सदस्या |
| 127. | 34 | ड | मंगला शशांक खेकरे | सदस्या |
| 128. | 35 | अ | संदिप रमेश गवई | सदस्य |
| 129. | 35 | ब | जयश्री मोहन वाडीभस्मे | सदस्या |
| 130. | 35 | क | विशाखा प्रकाश मोहोड | सदस्या |
| 131. | 35 | ड | अविनाश निलकंठ ठाकरे | सदस्य |
| 132. | 36 | अ | मिनाक्षी नितीन तेलगोटे | सदस्या |
| 133. | 36 | ब | पल्लवी अशोक श्यामकुळे | सदस्या |
| 134. | 36 | क | लहु दत्तुजी बेहते | सदस्य |
| 135. | 36 | ड | प्रकाश सिताराम भोयर | सदस्य |
| 136. | 37 | अ | प्रमोद हरिभाऊ तभाने | सदस्य |
| 137. | 37 | ब | सोनाली शालीक कडु | सदस्या |
| 138. | 37 | ड | दिलीप वामनराव दिवे | सदस्य |
| 139. | 38 | अ | उज्वला वसंतराव बनकर | सदस्या |
| 140. | 38 | ब | प्रफुल्ल विनोदराव गुडधे | सदस्य |
| 141. | 38 | क | प्रणिता चंद्रप्रकाश शहाणे | सदस्या |
| 142. | मानद सदस्य | | मा.श्री. अग्रवाल सुनिल जिवराज | सदस्य |
| 143. | मानद सदस्य | | मा.श्री.पोकुलवार गणेश उर्फ (मुन्ना) रामन्ना | सदस्य |
| 144. | मानद सदस्य | | मा.श्री.वानखेडे किशोर रामकृष्ण | सदस्य |
| 145. | मानद सदस्य | | मा.श्री.गांधी निशांत गिरीश | सदस्य |
| 146. | मानद सदस्य | | मा.श्री.किशोर दामोदरराव जिचकार | सदस्य |

अनुपस्थित सदस्य

| अनु. क्र. | प्रभाग क्र. | अ/ब | मा. सदस्यांचे नांव | पद |
|-----------|-------------|-----|----------------------------|--------|
| 1. | 2 | क | नेहा राकेश निकोसे | सदस्या |
| 2. | 6 | अ | जितेन्द्र भास्कर घोडेस्वार | सदस्य |
| 3. | 7 | ड | संदीप प्रल्हाद सहारे | सदस्य |
| 4. | 10 | अ | साक्षी विपीन राऊत | सदस्या |
| 5. | 10 | क | नितिश गंगाप्रसाद ग्वालवंशी | सदस्य |
| 6. | 10 | ड | गार्गी प्रशांत चोपरा | सदस्या |
| 7. | 12 | अ | दर्शनी स्वानंद धवड | सदस्या |
| 8. | 12 | ब | माया चिंतामन इवनाते | सदस्या |
| 9. | 28 | अ | किशोर रतनलाल कुमेरिया | सदस्य |
| 10. | 31 | ड | रविंद्र प्रभाकर भोयर | सदस्य |

उपस्थित अधिकारी

श्री.अश्विन मुदगल, निगम आयुक्त
श्री.हरिश दुबे, निगम सचिव

महापौर:- सर्वांचे स्वागत आहे. सभेची कार्यवाही सुरु करण्यात येते.

तराव क्रमांक 160 :- मा. महापौरजी यांनी दिलेल्या निर्देशानुसार निगम सचिव यांनी खालील अभिनंदन प्रस्ताव सभागृहात वाचून दाखविले व सभागृहाने त्यास मंजूर मंजूरच्या आवाजाने एकमताने मंजूरी प्रदान केली.

अभिनंदन प्रस्ताव

रणजी करंडक व कूचबिहार करंडक

सन २०१८ मधील जानेवारी महिना विदर्भ क्रिकेट संघटना, क्रिकेटपटू आणि विदर्भातील क्रिकेट प्रेमींना अविस्मरणीय असाच राहिला. १ जानेवारी, २०१८ रोजी म्हणजे वर्षाच्या पहिल्या दिवशी तब्बल ६० वर्षांनंतर व प्रथमच अंतिम सामना खेळणाऱ्या विदर्भाने इंदूर येथील होळकर स्टेडियमवर **रणजी करंडक क्रिकेट स्पर्धेत** दिल्ली संघाचा पराभव करून जेतेपद पटकाविले. तर जानेवारी महिन्याच्या अखेरेच्या दिवशी भविष्यातील स्टार १९ वर्षाखालील मुलांनी सिव्हील लाइन्स येथील व्हीसीए स्टेडियमवर कूचबिहार करंडक क्रिकेट स्पर्धेच्या अंतिम फेरीत पहिल्यांदा विदर्भाने भेदक मारा व तुफान फलंदाजीच्या बळावर “विजेतेपद” पटकाविल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा या दोन्ही संघाचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

सुधाकर गायधनी

जागतिक कला आणि संस्कृती अकादमीतर्फे ज्येष्ठ कवी सुधाकर गायधनी यांची ऑनररी डी. लिट इन लिटरेचर या मानद डॉक्टरेटसाठी निवड करण्यात आल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

डॉ. वि.स. जोग

विदर्भ साहित्य संघाच्यावतीने देण्यात येणारा जीवनव्रती हा पुरस्कार ज्येष्ठ साहित्यिक डॉ. वि.स. जोग यांना जाहीर झाल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

हर्षिनी कान्हेकर

नागपूरकर हर्षिनी कान्हेकर या देशाच्या पहिल्या महिला अग्निषमन अधिकारी झाल्या आहेत. त्यामुळे उपराजधानीच्या शिरपेचात मानाचा तुरा रोवला गेल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

सुरेश साखरे

बहुजन समाज पार्टीच्या प्रदेशाध्यक्षपदी सुरेश साखरे यांची निवड करण्यात आल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

प्रकाश जाधव

माजी खासदार प्रकाश जाधव यांच्याकडे शिवसेनेच्या जिल्हा प्रमुखपदाची सूत्रे सोपविण्यात आल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

यश कांबळे / आचल भोयर

स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडीयातर्फे जम्मू आणि गुवाहाटी येथे आयोजित 63 व्या राष्ट्रीय शालेय स्पर्धे अंतर्गत नागपूरातील मुंडले पब्लिक स्कूलचा नवव्या वर्गातील विद्यार्थी यश जयेश कांबळे याने सुवर्णपदक प्राप्त केले. तर विदर्भ बुनियादी कनिष्ठ महाविद्यालयाची 12 वीची विद्यार्थिनी आचल सूरजचंद भोयर हिने कांस्यपदक पटकविल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा दोघांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

राहुल सहारे

नागपूर महानगरपालिकेच्या प्रियदर्शनी उच्च मराठी प्राथमिक शाळेतील इयत्ता आठवीतील विद्यार्थी राहुल सहारे ह्याने राष्ट्रीय स्तरावर खो-खो स्पर्धेत सुवर्णपदक प्राप्त केल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

राम भाकरे

विदर्भ साहित्य संघातर्फे हरिकिसन अग्रवाल स्मृती पुरस्काराकरीता दैनिक लोकसत्ताचे ज्येष्ठ पत्रकार राम मधुकर भाकरे यांची निवड करण्यात आल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची हि सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

सुरभी जयस्वाल

पर्यावरण संरक्षण आणि शाश्वत विकास या क्षेत्रात केलेल्या उल्लेखनीय योगदानाबद्दल यशवंत भारती लोककल्याण संस्थेतर्फे दिल्या जाणाऱ्या विदर्भ भूषण हा पुरस्कार ग्रीन व्हीजल पर्यावरण संस्थेची प्रमुख कार्यकर्ता सुरभी जयस्वाल यांना महापौर नंदाताई जिचकार यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आल्याबद्दल नागपूर महानगरपालिकेची ही सभा त्यांचे विशेष रूपाने हार्दिक अभिनंदन करीत आहे.

श्रीमती बिंझाणी महिला महाविद्यालयाच्या राज्यशास्त्र विषयाच्या विद्यार्थिनी दरवर्षी नागपूर महानगरपालिकेमध्ये नियमित सभेचे कामकाज पाहण्यास येत असतात. यावर्षी देखील विद्यार्थिनींना नागपूर महानगर पालिकेमध्ये शनिवार, दि. 03.02.2018 रोजी सभेच्या कामकाजाचे अवलोकन करण्याची परवानगी द्यावी.

ठराव क्रमांक 161 :- नागपूर महानगरपालिका, नागपूर महानगरपालिका, सभेचे खालील कार्यवृत्त कायम करण्याचा प्रश्न सभागृहाने विचारात घेवून कायम करण्यास मान्यता प्रदान केली.

1. म.न.पा. सर्व साधारण सभा दिनांक 20.11.2017 सकाळी 11.00 वाजता चे कार्यवृत्त
2. म.न.पा. स्थगित सर्व साधारण सभा दिनांक 20.11.2017 दुपारी 12.45 वाजता चे कार्यवृत्त
3. म.न.पा. सर्व साधारण सभा दिनांक 08.12.2017 सकाळी 11.00 वाजता चे कार्यवृत्त
4. म.न.पा. स्थगित सर्व साधारण सभा दिनांक 08.12.2017 दुपारी 12.40 वाजता चे कार्यवृत्त

ठराव क्रमांक 162 :- नागपूर महानगरपालिका, स्थायी समितीचे खालील तिमाही अहवाल कायम करण्याच्या प्रश्नाची सभागृहाने नोंद घेतली.

1. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक २३-०६-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
2. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक ०७-०७-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
3. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक २१-०७-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
4. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक ०४-०८-२०१७ रोजी दुपारी १२-०० वाजता
5. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक १०-०८-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
6. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक २३-०८-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
7. म.न.पा. स्थायी समिती विशेष सभा दिनांक २९-०८-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
8. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक १२-०९-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
9. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक २८-०९-२०१७ रोजी दुपारी १२-०० वाजता
10. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक १०-१०-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
11. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक २७-१०-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
12. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक ०७-११-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता
13. म.न.पा. स्थायी समिती सभा दिनांक १६-११-२०१७ रोजी दुपारी ०३-०० वाजता

ठराव क्रमांक 163 :- नागपूर महानगरपालिका, विशेष समित्यांचे खालील कार्यवृत्त कायम करण्याचा प्रश्न सभागृहाने विचारात घेवून कायम करण्यास मान्यता प्रदान केली.

1. स्थापत्य विद्युत व प्रकल्प विशेष समिती.
 1. गुरुवार दिनांक दि. 12.10.2017 दुपारी 12.00 वाजता चे कार्यवृत्त
 2. शनिवार दिनांक दि. 18.11.2017 दुपारी 12.00 वाजता चे कार्यवृत्त
2. वैद्यकीय सेवा व आरोग्य विशेष समिती
 1. मंगळवार दि. 14.11.2017 दुपारी 02.00 वाजता चे कार्यवृत्त
 2. गुरुवार दि. 07.12.2017 दुपारी 02.00 वाजता चे कार्यवृत्त
3. विधी विशेष समिती
 1. मंगळवार दि. 03.10.2017 सायंकाळी 04.00 वाजता चे कार्यवृत्त
4. शिक्षण समिती
 1. सोमवार दि. 30.10.2017 सकाळी 11.30 वाजता चे कार्यवृत्त
5. महिला बाल कल्याण विशेष समिती
 1. बुधवार दि. 29.11.2017 सकाळी 11.00 वाजता चे कार्यवृत्त
6. जलप्रदाय विशेष समिती
 1. मंगळवार दि. 05.12.2017 दुपारी 03.00 वाजता चे कार्यवृत्त
7. अग्निशमन विशेष समिती
 1. गुरुवार दि. 21.12.2017 सायंकाळी 04.00 वाजता चे कार्यवृत्त

महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियमातील कलम 44 अंतर्गत मा. सदस्यांनी प्रशासनाकडे विचारलेले प्रश्न

महापौर :- मा.सदस्यगण, प्रश्नोत्तराचा तास सुरु करण्याअगोदर नवीन अधिका-यांनी आपला परिचय द्यावा.

श्री.प्रमोद गावंडे (सहा.संचालक,नगररचना):- मा.महापौरजी, मी प्रमोद गावंडे, सहा.संचालक, नगररचना, या पदावर महानगरपालिका नागपूर येथे 01 जानेवारी 2018 रोजी रुजू झालेला आहे. यापूर्वी मी नगररचना पुणे मुख्य कार्यालयात सहा.संचालक म्हणून काम केलेले आहे.

महापौर :- मा.सदस्यगण, प्रश्नोत्तराच्या तासाला सुरुवात करू. 12.30 मिनिट झालेले आहे, एका तासात आपल्याला 9 प्रश्न संपवायचे आहे. त्यामुळे वेळेचे भान असु द्या बाकीचे ही आपल्याला विषय घ्यायचे आहे.

प्रश्न क्रमांक 57:-01 डिसेंबर 2017 मध्ये शहर बस सेवा (आपली बस सेवा) कडून बसेसचे देखभाल, कर्मचाऱ्यांचे वेतन वगळता मनपास किती उत्पन्न प्राप्त झाले? व किती आर्थिक नुकसान झाले? संदर्भात प्रश्न.

श्री.संदिप जोशी :- मा.महापौरजी, परिवहन विभागाचे तीन प्रश्न याठिकाणी मा.सदस्यांनी विचारलेले आहे त्यामुळे प्रश्न क्र 57, 59, आणि 65 हे तिन्ही प्रश्न एकत्रित पुकारण्यांत यावे.

महापौर :- प्रश्न क्र. 57,59 आणि 65 हे तिन्ही प्रश्न एकत्रित घेण्यांत येत आहे.

श्री.ऋषिकेश (बंटी) शेळके :- मा.महापौरजी, हे जे उत्तर मला प्रशासनाकडून मिळालेला आहे त्या उत्तरापासून मी तर समाधानकारक राहणारच नाही, बाकी लोकांना ही जर हे उत्तर वाचून दाखविले तर आपल्या सत्तापक्षाच्या मा.सदस्यांचे सुध्दा समाधान होणार नाही. आपण त्या कंपनीला पाठीशी का घालत आहे. सर्व सदस्यांना विचारा त्यांच्या त्यांच्या भागामध्ये बस सेवा महानगरपालिकेतर्फे उपलब्ध होत आहे काय ? नागपूर शहरातील सर्व नागरिकांना ही बस सेवा मिळते काय ?

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, मुळात हा प्रकल्प सुरु झाल्यानंतर आपण जवळ जवळ 52 नवीन मार्गावर बस वाहतूक सुरु केलेली आहे. सुरुवातीला व्ही.एन.आय.टी. च्या ऑपरेटरच्या वेळेस ज्या 220 ते 230 गाड्यांचा सरासरी ऑपरेशन व्हायचे, त्या तुलनेमध्ये

सध्यस्थितीमध्ये 375 बसेसद्वारे आपल्या शहराची बस वाहतूक सुरु आहे. व्ही.एन.आय.एल. द्वारे त्या वेळेस फक्त 58 मार्गावर वाहतूक सुरु होती आपण सध्यस्थितीमध्ये 109 मार्गावर आपण वाहतूक सुरु केलेली आहे. तसेच कुठल्याही कंत्राटदाराला कुठलाही फेव्हर आपण केलेला नाही.

श्री.ऋषिकेश (बंटी) शेळके :- मा.महापौरजी, मला हे सांगा कि करारनाम्याच्या ज्या अटी,शर्ती व निकष होते ती कंपनी संपूर्ण पाळून राहिली आहे काय?

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, यामध्ये कंत्राटदारामार्फत ज्या सर्व्हीस लेव्हल अग्रीमेंटमध्ये त्रुटी राहिलेल्या आहे, त्याच्यामध्ये जे पेनॉल्टीचे क्लॉजेज आहे, त्यानुसार सर्व कंपन्यावर पेनॉल्टी नियमित लावण्यांत येत आहे.

श्री प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, एकंदरीत बस सेवा तीन वेळेस बंद पडली होती. या आधी सभागृहात उत्तर देण्यांत आले होते कि आपण पेनॉल्टी त्या कंपनीकडून वसूल करू. आतापर्यंत त्या कंपनीकडून किती रकमेची पेनॉल्टी वसूल करण्यांत आली आहे. त्याची माहिती सांगण्यात यावी.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, शहर बस वाहतूकीचे तीन संप झाले होते. एक मार्च महिन्यात, एक सप्टेंबर व एक डिसेंबर यामध्ये ट्रायल रनच्या पिरीअडमध्ये 10 डिसेंबर 2017 पर्यंत जे संप होते ते कायम पिरीअडचे असल्यामुळे डेट ऑफ कमीटमेंटपासून सहा महिन्यापर्यंत आपल्याला त्यांच्यावर पेनॉल्टी उपलब्ध न झालेल्या वाहनासाठी करता आली नाही. तथापि डिसेंबर 2017 मध्ये 12 तारखेचा जो संप आहे, त्यामध्ये संपूर्ण आपण रिकव्हरी केलेली आहे.

श्री प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, पाईट ऑफ आर्डर, याठिकाणी आता सांगण्यात आले कि डेट ऑफ कमीटमेंटपासून 6 महिन्यापर्यंत त्या कंपनीला पेनॉल्टी भरावयाची नाही. समजा ऑपरेशनमध्ये बिगाड झाला असेल काही अपरिहार्य कारणाने ती बस सेवा चालत नसेल त्या पिरिअडमध्ये दंड आकारावयाचा नव्हता,

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापकांनी सांगितले कि 6 महिन्यापर्यंत पेनॉल्टी आकारावयाची नव्हती हे बरोबर आहे पण पेनॉल्टी कोणती आकारावयाची होती, हे सांगण्यात यावे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, संप जो झाला तो कंत्राटदार कंपनीच्या कारणामुळे झालेला होता. तो महानगरपालिकेच्या कारणामुळे झालेला नाही. बस फेल झाली कुठल्या कारणाने अपघात झाला अश्यावेळेस आपल्याला पेनॉल्टी आकारता येणार नाही, परंतू संप सुरु असतांना नागपूर शरातील संपूर्ण बस सेवा बंद पडली, आणि त्या काळातील आपण पेनॉल्टी आकारत नाही असे जर प्रशासनाचे म्हणणे असेल तर हे म्हणणे चुकिचे आहे त्या काळातील पेनॉल्टी आपण त्या कंपनीकडून वसूल करण्याचे निर्देश द्यावे.

श्री.संदिप जोशी :- मा.महापौरजी, याच्यामध्ये जे क्लॉज आहे मला असे वाटते कि त्या क्लॉजचे वाचन आपण याठिकाणी करावे कि कुठल्या कारणासाठी पेनॉल्टी आकारण्यात येते.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, याच्यामध्ये जे क्लॉज दिलेले आहे ते मी वाचतो.

8. FINES AND PENALTY/INCENTIVES

“ Fines and penalties/incentives for deficiency/efficiency in service quality levels and in other service related parameters shall be levied as per details given in schedule-2 Fines and Performance Assessment System of the RFP document. Fines will be levied on operator as per (A) schedule of fines of SCHEDULE-2. These fines shall be recovered from the dues payable to the service provider as direct payment. All penalties and/or incentives shall be calculated in monetary terms in accordance with Performance Assessment System (PAS) and shall be paid/deduct to operator at the time of schedule invoice payment, subject to successful implementation of PAS after testing period of 6 months. The Performance Assessment System shall be applicable after 6 months from COD. Within 6 months of testing period the PAS will be modified and adjustments will be made to the baseline conditions based on actual experience. If the recovery as above not be possible for any reason the Nagpur Municipal Corporation shall invoke the performance guarantee and recover the dues. Nagpur Municipal Corporation shall be free to recover these fines/penalties from any other payment due to the service provider. These fines/penalties/action

shall be over and above any other the enforcement agencies/police etc. takes and hence are no substitutes for those actions. Nagpur Municipal Corporation shall also be free to take any other actions as deemed fit in different cases. ”

या व्यतिरिक्त क्लॉज 8.1 याची जी व्याख्या आहे त्याच्यामध्ये सी.ओ.डी.ची जी व्याख्या आहे ती खालील प्रमाणे आहे.

“Commercial Operations Date or COD” means the date on which period of 6 months (Six) completion from the date of execution of this agreement for the new buses to be purchased, operated and maintained by the operator as well as the NMC owned buses. This agreement shall expire on the date 10 years from the execution of the agreement as detailed in Clause 2.1”

Note : The maximum penalty in all the cases shall not be exceed 10% of the average monthly billed amount. The penalty under this section shall be applicable from the three months from COD.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, त्यांनी यामध्ये असे कुठेही म्हटलेले नाही कि, बस बंदच्या दरम्यानची पेनॉल्टी आकारू नये. आपण तसा तर्क लावून राहिलेला आहे. पेनॉल्टीचा जो क्लॉज दिलेला आहे कि ऑपरेशन, मेनटेनेंसच्या दरम्यान कुठली काही अडचण आली तर पेनॉल्टी लावणे योग्य नाही. मात्र सरसकट संप झाला आणि त्यात नागपूर शहराची जनता वेठीस धरल्या गेली, त्यांना परिवहन सुविधा मिळाली नाही आणि या सभागृहामध्ये आपण उत्तर दिले ती जी रक्कम होती ती रक्कम सुध्दा आपण या ठिकाणी वाचून दाखविली आणि मा.महापौरजी आपण रूलिंग सुध्दा या सभागृहामध्ये दिले कि त्या संबंधित कंत्राटदार कंपनीकडून त्या पेनॉल्टीची रक्कम वसूल करण्यांत यावी. आता यांनी वेगळे इंटरप्रिटेशन सुरू केले कि तो टेस्टिंग पिरेड होता तो सी.ओ.डी. पिरेड होता, त्या पिरेडची कुठल्याही प्रकारची पेनॉल्टी आकारता येत नाही. मा.महापौरजी, जर बस सर्व्हीसेस बंद होत असेल तर पेनॉल्टी निश्चितपणाने आकारली पाहिजे, आणि याठिकाणी जो अग्रीमेंटचा जो क्लॉज वाचन केलेला आहे त्या अनुषंगाने कुठलीही बाधा आपल्याला पेनॉल्टी वसूल करण्यासाठी होत नाही. म्हणून मा.महापौरजी आपण पेनॉल्टी वसूल करण्याचे निर्देश द्यावे. तीनही बस बंदच्या दरम्यानची पेनॉल्टी वसूल करण्यांत यावी.

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, पेनॉल्टीचा क्लॉज आहे त्यामध्ये 40 क्लॉज आहे, बसचे कांच फुटले असेल, बसचे दरवाजे तुटले असेल, सीट फाटली असेल किंवा बसेसची पार्किंग नसेल, बसचे टायर बरोबर नसेल, बसचे पेंट निघाले असेल असे 40 क्लॉज आहे. फक्त बस बंद बघलचा क्लॉज नाही.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, पार्ट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापकांनी उत्तर द्यावे.

श्री.प्रविण भिसीकर :- मा.महापौरजी, पार्ट ऑफ इंफार्मेशन, त्यामध्ये सफाईसाठी पेनॉल्टी होती. त्यासाठी पर बस पर डे 100 रूपये पेनॉल्टी करावयाची होती. बसेस सफाई होत नव्हत्या परिवहन समितीच्या बैठकीमध्ये मा.व्यवस्थापक साहेबांनी किती वेळेस हे सांगण्यात आले कि याच्यावर पेनॉल्टी का करित नाही. त्या वेळेसचे कॅलक्युलेशन 32 लाख रूपये पेनॉल्टी निघत होती. हे म्हणत होते डिसेंबरपर्यंत थांबा, डिसेंबरनंतर सुध्दा त्यांनी पेनॉल्टी दिलेली नाही. सर्वात मोठी बाब ज्यांना ज्यांना आपण डेपो दिलेले आहे. त्यामध्ये आपल्याला त्यांना वॉशिंग सेंटर टाकून द्यावयाचे नव्हते, या बॉयलाजमध्ये असे कुठेही लिहिलेले नाही कि वॉशिंग सेंटर आपल्याला टाकून द्यावयाचे आहे. ही त्यांची जिम्मेदारी होती, त्यांना वॉशिंग करावयाची होती. आज किती ऐजन्सीचे वॉशिंग सेंटर आहे, ज्यांनी वॉशिंग सेंटर निर्माण केलेले आहे ते नियम आणि निकष मध्ये आहे काय ? हे पाहणे आवश्यक आहे कारण कि त्याच्यामध्ये पर्यावरणाची एन.ओ.सी. घेतलेली नाही. परवानगी न घेता वॉशिंग सेंटर टाकता येते काय? परिवहन व्यवस्थापकांनी याचा खुलासा करावा.

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, जरी सी.ओ.डी. होईपर्यंत पेनॉल्टीची प्रोव्हीजन नसली तरी सी.ओ.डी. संपल्यानंतरचा जो कालावधी डिसेंबरमध्ये सुरू झालेला आहे, त्याच्यामध्ये आपण बस अस्वच्छ असो, किंवा चालक गणवेशात नसो किंवा गाडीची सीट कंडीशन खराब असो,

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापकांनी हे सांगू नये. प्रश्न कसा

आहे आपण बसवर पेनॉल्टी का लावली नाही, मी सांगितले आहे कि 40 क्लॉज होते, बसची साफ-सफाई झाली नसेल, कांच फुटले, दरवाजा नसेल, बसला पेंटींग नसेल त्याच्यावर 40 फाईन आहे. याच्यामध्ये 4 ऑपररेटर आहे, सर्वात मोठा ऑपररेटर म्हणजे आय.बी.टी.एम. त्याच्या गलतीमुळे बससेवा बंद पडली आहे. त्याच्यामुळे बससेवा फेल पडली आहे, त्या आय.बी.टी.एम.ला आपण का सोडून राहिलो आहे.

महापौर :- आतापर्यंत त्या कंत्राटदार कंपनीवर किती पेनॉल्टी लावली आहे.

श्री प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, सी.ओ.डी. काळामध्ये बंदचा काळ अंतर्भूत होतो किंवा नाही, या गोष्टीचे स्पेसिफिक उत्तर यांना द्यावयास सांगावे.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप):- मा.महापौरजी, बस उपलब्ध न करणे, म्हणजे नॉन अवेबिलिटी फॉर बस एक दिवसात उपलब्ध करून न दिल्यास पर बस पर डे रूपये तीन हजाराचा जो दंड आहे, त्याच्यामध्ये संप काळामध्ये सी.ओ.डी.मध्ये आपल्याला कुठलीही पेनॉल्टी करण्याचा प्रावधान नव्हते.

श्री.प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, सी.ओ.डी.च्या काळामध्ये संप होईल, असा अपेक्षितच नव्हते. मा.महापौरजी, सी.ओ.डी.चा जो काळ आहे सुरुवातीला झाल्या झाल्याच ते संप करून राहिले आहे आणि एकदा नाही तो संप तीनदा होवून राहिला संप ज्या कारणासाठी होवून राहिला त्या कारणासंदर्भात एक वेगळी चर्चा घ्यावी लागणार आहे. मात्र त्या संप काळाच्या दरम्यानचा आपण सी.ओ.डी.चा आधार घेवून राहिलो आहे हे पुर्णतः चुकिचा आहे आणि त्या कंत्राटदार कंपनीला पाठीशी घालण्याचा काम प्रशासनाच्या माध्यमातून सुरु आहे या प्रश्नावर कितीदा चर्चा करायची या आधी मी दोनदा हा प्रश्न उपस्थित केला, त्यावेळेचे आपले लिखित उत्तर आहे कि प्रशासनाच्या माध्यमातून ही पेनॉल्टीची रक्कम आम्ही त्या कंत्राटदार कंपनीकडून वसूल करू. मा.महापौरजी, या आधी दिलेले उत्तर चुकिचे होते काय ? त्यावेळेस सी.ओ.डी.चे कंडीशन व करारनाम्याच्या कंडीशन यांनी तपासल्या नव्हता काय ? जर त्या तपासल्या असत्या आणि विचारपूर्वक उत्तर दिले असते तर त्याच्या अनुषंगाने आपण आदेश दिले होते, त्या आदेशाची अंमलबजावणी अद्यापपर्यंत झालेली नाही. त्या उलट आता ते पाठराखण करून राहिलेले आहे आणि त्या सी.ओ.डी.चा सहारा घेण्याचा प्रयत्न करीत आहे. सी.ओ.डी. कशासाठी आहे. याठिकाणी मा.सदस्य, श्री.बाल्या बोरकर यांनी सांगितले कि 40 वेगवेगळ्या पेनॉल्टीचे क्लॉजेस आहे. 40 प्रकारच्या क्लॉजचा आपण जर नियम भंग केला किंवा त्या अटी व शर्ती भंग केल्या तर त्या संदर्भात आपल्याला ही पेनॉल्टी लावता येते. मा.महापौरजी त्या अग्रीमेंटमध्ये आपण सुधारणा केली पाहिजे, कि बंद काळामध्ये एक बस उपलब्ध नाही झाली म्हणुन आपण तीन हजार रूपये लावून राहिलो ठिक आहे. पण संपूर्ण शहराची वाहन व्यवस्था पुर्णतः बंद झाली आणि नागरिकांना जो त्रास झाला त्यासाठी आपण किती पेनॉल्टी लावणार आहे. म्हणुन हे सी.ओ.डी.चा जो आधार घेवून राहिले आहे, त्याबाबत आपण ताबडतोब निर्णय दिला पाहिजे आणि बंद काळाच्या दरम्यानची जी पेनॉल्टीची रक्कम आहे ती तातडीने वसूल करण्याचा पहिल्यांदा आपण आदेश दिला तर आम्ही दुसरे प्रश्न सुरु करू शकतो. नाही तर ही चर्चा इकडून तिकडे हे फिरवत राहतील म्हणुन आपण या संबंदात पहिले आदेश द्यावे.

श्री.संदिप जोशी :- मा.महापौरजी, ही तिन्ही प्रश्न आपण एकत्रित पुकारले आहे आणि हे तिन्ही प्रश्न होवून सर्वात शेवटी आपण या तिन्ही प्रश्नावर निर्णय घ्यावा.

प्रश्न क्रमांक 65:- परिवहन व्यवस्थापकाने इलेक्ट्रॉनिक तिकीट मशिन घोटाळा जो वृत्तपत्राच्या माध्यमातून दि. 04.01.2018 सध्या प्रकाशित झालेला आहे. या जबाबदार अधिकारी कोण? संदर्भात प्रश्न.

श्री.नितीन साठवणे :- मा.महापौरजी, माझ्या प्रश्नाचे व्यवस्थित उत्तर मला मिळालेले नाही. मा. महापौरजी, यांनी उत्तर वाचण्याचे निर्देश द्यावे.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, प्रश्न असा आहे कि परिवहन व्यवस्थापकांनी इलेक्ट्रॉनिक टिकीट मशीन खरेदी घोटाळा जो वृत्तपत्राच्या माध्यमातून दिनांक 04.01.

2018 रोजी प्रकाशित झालेला आहे. यास जबाबदार अधिकारी कोण? या अधिका-यावर प्रशासनाने कोणती कार्यवाही केलेली आहे. बोगस कॅश कार्डमुळे झालेल्या घोटाळ्यास जबाबदार अधिकारी कोण? या प्रश्नाच्या संदर्भात कोणती कार्यवाही केलेली आहे. मा.महापौरजी यात दोन प्रश्न आहे. मी सर्वप्रथम पहिल्या प्रश्नाचे उत्तर व त्याचा खुलासा सदनासमोर सादर करतो. इलेक्ट्रॉनिक टिकिट मशीन खरेदी प्रकरणी कुठलाही घोटाळा केलेला नाही. वृत्तपत्राच्या माध्यमातून प्रकाशित जी बातमी आहे ती दि.03.01.2018 रोजी जवळपास 7 ते 8 वृत्तपत्रामध्ये जी बातमी प्रकाशित झालेली होती. त्याचदिवशी परिवहन विभागाचे जावक क्रमांक 896, दिनांक 03.01.2018 अन्वये एक खंडन आम्ही जनसंपर्क विभागात तातडीने पाठविले होते.

श्री.नितीन साठवणे :- पाईट ऑफ इंफार्मेशन, खंडन कोणत्या पेपरमध्ये आलेले आहेत ते ही सांगावे.

श्री.प्रविण दटके :- पाईट ऑफ आर्डर, ही जी मशीन खरेदी प्रक्रिया होती ती कशी करावी लागते. कुटुन फाईल कुठे जाते, मग ती फाईल समितीसमोर जाते काय ? ही पुर्ण प्रोसीजर यांनी सांगावी.

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, मुळात बस सेवा हा जो प्रकल्प आहे. हा संपुर्णपणे एकत्रित प्रकल्प होता. जी नवीन ए.टी.एम मशीन खरेदी केली आहे तिला मेट्रोनी आपल्याला स्पेसीफिकेशन दिलेले होते.

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापकांनी आपण फाईल कशी मुद्द करतो ते सांगावे.

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, हा प्रकल्प सुरु करतांना यामध्ये सात कंत्राटदाराची नियुक्ती त्या व्यतिरिक्त ए.टी.एम. मशीन खरेदी, जी.पी.एस. आणि फेअर कलेक्टिंग एजन्सीची नियुक्ती हा जो एकत्रितपणे प्रकल्प होता याचे सादरीकरण आपण परिवहन समितीकडे सर्वप्रथम करून त्याची मान्यता आपण घेतलेली होती.

श्री.नितीन साठवणे :- पाईट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, यांनी 1 कोटी 54 लक्ष रुपयांच्या ज्या मशीनी खरेदी केल्या, त्या खरेदी केल्यानंतर वृत्तपत्राच्या बातमीतून समितीला माहित झाले. जेव्हा आम्ही वर्तमानपत्रात वाचले तेव्हाच आम्हाला माहित झाले कि 1.54 लक्ष रुपयांची परस्पर मशीनी खरेदी करण्यांत आल्या आहेत आणि 2017-18 च्या समितीच्या अर्थसंकल्पामध्ये याची कुठेही नोंद नाही.

श्री प्रविण दटके :- मा.महापौरजी, आपण परिवहन व्यवस्थापकांना एक सोपा प्रश्न विचारला कि मशीन विकत घेण्याची प्रोसेस काय आहे ? तेवढी सांगावी माझा मुद्दा असा आहे कि मेट्रोनी सांगितले, यांनी सांगितले त्याच्याशी आमचा काहीही संबंध नाही. माझे म्हणणे आहे कुठली कंपनी आहे, कुठली प्रोसेस आहे त्यासाठी आपल्याला टेंडरमध्ये जावे लागेल, ते कसे केले काय केले, कोणत्या वृत्तपत्रात आले होते. केव्हा ऑनलाईन आले, केव्हा परिवहन समितीची मान्यता घेतली त्या तारखेसहित सांगण्यात यावे.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, आपण ही मशीन खरेदी टेंडरींग प्रोसेसद्वारे केली होती. याबाबत वृत्तपत्रामध्ये नियमित जाहिरात त्या व्यतिरिक्त महाराष्ट्र ई-टेंडर वर आपण टेंडर फ्लोड केले होते. यानंतर याच्यासोबत एस.बी. आणि मॅट्रोचे स्पेसीफिकेशन मॅच केल्यानंतरच ई-टेंडर झाल्यानंतर याच्यामध्ये दोन कंपन्यांनी भाग घेतला होता. ए.टी.एम.मशीन या कंसेप्टमध्ये अॅडव्हॉंस मशीन आहे. आपल्याकडे जेव्हा हा प्रकल्प 5 डिसेंबर 2016 रोजी सुरु केला त्यावेळेस 2009 ला आपल्याकडे बालाजी कंपनीच्या ज्या जून्या मशीन होत्या, त्या मशीनची दुरुस्ती करून आपण त्या मशीन त्यावेळेस कार्यान्वित केलेल्या होत्या. त्या मशीन युजमध्ये कंटीन्युव होत्या, बालाजीच्या ज्या मशीन आहे त्या अद्यापही दुरुस्त करून आपण चालवुन राहिलो आहे.

श्री. प्रविण दटके :- मा.महापौरजी, आम्ही यांना विचारत आहे कि टेंडर किती आले होते, केव्हा आपण ओपन केले केले, या कामाकरिता किती कंपनी आल्या होत्या, टेंडर केव्हा ओपन केले.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप):- मा.महापौरजी, वृत्तपत्र व महाराष्ट्र ई-टेंडरवर त्या

निविदा प्लोड केल्यानंतर आपल्याला 3 कंपन्या त्यामध्ये अपेक्षित होत्या.

श्री प्रविण दटके :- मा.महापौरजी, आपल्याला किती कंपन्या अपेक्षित होत्या तो काय आपला प्रश्न आहे काय ? आपण टेंडर काढले. मुळ मुद्या हा आहे कि परिवहन समिती आहे तीला लिगल स्टेटस आहे. त्या समितीचा एक सदस्य म्हणजे स्थायी समितीचा चेअरमन आहे. हे सगळे असतांना त्या समितीची कुठल्या दिवशी परवानगी घेतली, त्या समितीमध्ये कुठल्या दिवशी ठराव आला हे यांनी सांगितले पाहिजे.

श्री.प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापकाला किती लाखापर्यंतच्या रकमेच्या निविदेला मंजूरी देण्याचे अधिकार आहे. आणि परिवहन समितीला किती लाखापर्यंतच्या रकमेच्या निविदेला मंजूरी देण्याचे अधिकार आहे. त्याचा कलम कोणते आहे हे स्पेसीफिक सांगण्यात यावे.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप):- मा.महापौरजी, मी येथे सांगु इच्छितो कि परिवहन समितीच्या गुरुवार दि. 20.10.2016 रोजीच्या सभेतील ठराव क्रमांक 23 या अन्वये आपण याच्यामध्ये आपण एकत्रित ब्लॅकट परमिशन घेतलेली होती.

श्री.प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, प्रश्न असा आहे कि, परिवहन व्यवस्थापकाला किती खर्चाच्या मर्यादेपर्यंतचे अधिकार कायद्याने दिलेले आहे. मा.महापौरजी, आपल्या कायद्याच्या कलम 75 चे वाचन या ठिकाणी करण्यांत यावे. कलम 75 अन्वये व्यवस्थापकांना व पर्यावरण समितीला किती रकमेच्या खर्चाचे अधिकार दिलेले आहे हे नमुद आहे, याचे वाचन करण्याचे प्रशासनाला निर्देश द्यावे.

महापौर :- निगम सचिव यांनी कलम 75 चे वाचन करावे.

निगम सचिव :- मा.महापौरजी, कलम 75 केवळ परिवहन संविधांच्या बाबतीत कलम 73 व अनुसूचीच्या प्रकरण 5 च्या तरतूदीमध्ये जेथे जेथे आयुक्त हा शब्द येईल तेथे तेथे या शब्दाऐवजी परिवहन व्यवस्थापक हे शब्द आणि जेथे जेथे स्थायी समिती हे शब्द तेथे तेथे त्या शब्दाऐवजी परिवहन समिती हे शब्द दाखल करण्यात आले होते असा नियम लागू होतील.

श्री प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, याचा अर्थ असा आहे कि निगम आयुक्ताला निविदा मंजूरीचे अधिकार 25 लक्ष रुपयांचे आहे. त्याचप्रमाणे 25 लक्षापर्यंतचे अधिकार हे परिवहन व्यवस्थापकाला आहे. आणि 25 लक्षाच्या वरचा जर खर्च करायचा असेल तर आपण सर्व प्रस्ताव स्थायी समितीकडे पाठवितो. त्याचप्रमाणे हा प्रस्ताव परिवहन समितीकडे पाठवावे, मा.महापौरजी, हे स्पष्ट झालेले आहे कि ही निविदा 25 लक्ष रुपयांच्यावरची होती. 25 लक्षाच्या अधिकची ही निविदा होती तर याची मंजूरी आपण परिवहन समितीकडून का घेतली नाही. जर मंजूरी घेतली नसेल तर तो कंत्राट रद्द करण्याचा या ठिकाणी निर्देश देण्यांत यावे.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप):- मा.महापौरजी, स्थायी समितीचे जे आर्थिक अधिकार परिवहन समितीला विहित आहे त्यानुसार परिवहन विभागामार्फत दि 20 ऑक्टोबर 2016 रोजी सभेमध्ये आपण परिवहन समितीच्या सभेमध्ये हा ठराव सादर केलेला होता.

श्री.नितीन साठवणे :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन यावेळेस या अर्थसंकल्पाला त्यांनी नव्याने मंजूरी घ्यावयास पाहिजे होती की नाही, त्यांनी परस्पर मशीन खरेदी केली आहे.

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन, पहिली गोष्ट फाईल मंजूर करण्याअगोदर ती फाईल समितीकडे पाठवावी लागते, प्रशासकीय मान्यता यांनी घेतली, पण यांनी टेंडर मंजूरी घेतली नाही, डायरेक्ट फिंडर उघडला आणि मंजूर करून टाकला.

श्री.जितेंद्र कुकुडे :- मा.महापौरजी, आणि हया ज्या मशीनी घेतल्या त्या घेतल्यानंतर परिवहन समितीच्या आताचे जे सभापती आहे त्यांना ही बाब तोंडी सांगितली.

श्री प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, माझा परिवहन समितीच्या सभापतीवर पॉइंट ऑफ आर्डर आहे. जर त्यांना हा घोळ लक्षात आला तर तसा अहवाल त्यांनी या सभागृहात का पाठविला नाही.

श्री प्रविण दटके :- पॉइंट ऑफ आर्डर, मा.महापौरजी, परिवहन समितीच्या मा.अध्यक्षांनी जे जे करावयास पाहिजे होते ते सगळे केले, त्यांनी पत्र दिले आहे, ते योग्य ठिकाणी पहोचविले आहे, ज्या ठिकाणी ते पत्र जावयास पाहिजे होते त्या ठिकाणी ते नीट पहोचले आहे. आणि त्यांच्यावर आरोप करण्याची काहीच गरज नाही.

श्री प्रफुल गुडधे :- पाईट ऑफ आर्डर, तुम्ही कुठल्या समितीला पाठविले, आयुक्तांना पाठविले या संदर्भात माझा काही आक्षेप नाही. पण या सभागृहाच्या निदर्शनास का आणून दिले नाही. मा. महापौरजी, जर एखाद्या समितीला प्रशासन सहकार्य करीत नाही, कायद्याप्रमाणे प्रशासन काम करीत नाही.

श्री दयाशंकर तिवारी :- पाईट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, समिती के अहवाल को सभागृह के पटल पर रखना यह किसकी जिम्मेदारी है। कृपया यह जानकारी सभागृह मे दे।

निगम सचिव :- मा.महापौरजी, समितीचे अहवाल सदनासमोर ठेवण्याची जबाबदारी ही प्रशासनाची आहे.

श्री प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, याच्यामध्ये समितीचा जो अहवाल आहे त्या अहवालामध्ये अश्या संदर्भामध्ये भ्रष्टाचार झाल्याचे नमुद आहे काय ? मग सर्व समितीच्या अहवालाच्या संदर्भात चर्चा करावी लागेल. येथे अनेक समितीच्या अहवालाची नोंद सभागृहामध्ये दिलेली आहे. येथे हे अहवाल आपण नोटींगसाठी ठेवतो. मा.महापौरजी, माझ्या सकट सभागृहातील कुठल्या सदस्यांनी हे अहवाल वाचले असेल असे मला वाटत नाही. कारण कि इतक्या समित्या आहे, त्याचे अहवाल वाचणे शक्य होत नाही. या संदर्भात मला असे वाटते दयाभैय्याची सूचना बरोबर आहे. आपण पारदर्शिकता आणली पाहिजे ती फाईल अहवालाची कुठे आहे, ते अहवाल सर्व सदस्यांना मिळते काय? ते नस्तीबंध असते आणि नस्तीमध्ये अहवालाचा समावेश असतो. मा.महापौरजी, आपण हे अहवाल नेटवर का टाकत नाही, वेबसाईटवर का टाकत नाही. जेणेकरून सदस्यासकट शहरातील सर्व नागरिक वाचत बसतील. ज्याला या विषयाच्या संदर्भात इंटरनेट आहे तो वाचेल. जर हा अहवाल नोटींगसाठी आला होता तर कुठल्या तारखेचा परिवहन समितीचा अहवाल या सभागृहात आला होता आणि त्याच्यामध्ये काय नमुद केले त्याचे सुध्दा वाचन करण्यांत यावे. परिवहन समितीचा अहवाल कुठल्या दिवशी या सभागृहात आला होता त्याची तारीख सांगण्यात यावी. परिवहन व्यवस्थापक म्हणून राहिले कि आम्ही परिवहन समितीची मान्यता घेतली होती, ती प्रोसीडींग वाचा.

परिवहन व्यवस्थापक :- मा.महापौरजी, परिवहन समितीच्या गुरुवार दिनांक 20.10.2016 रोजी भरलेल्या सभेतील घेतलेला उतारा. ठराव क्रमांक २३:- नागपूर शहरबस वाहतुक सुचारूपणे संचालन करण्याकरीता सद्यःस्थितीत Net Cost Contract या तत्वावर वाहतुक करणारे मे. वंश निमय इन्फ्राप्रोजेक्टस् लि. यांचे ऐवजी नविन शहरबस ऑपरेटरद्वारे शहरबसचे संचालन प्रस्तावित आहे. यामध्ये मनपा महासभा ठराव क्र. १४४, दि. २१/०८/२०१५ अन्वये वातानुकुलीत इथेनॉल संचालित ग्रीन बस व महासभा ठराव क्र. १४५, दि. २१/०८/२०१५ अन्वये नविन डिझेल बस ऑपरेटर उपलब्धतेसह आय.बी.टी.एम. ऑपरेटरच्या नियुक्तीस मान्यता प्रदान करण्यात आलेली आहे.

ग्रीन बस ऑपरेटरच्या ५५ नविन वातानुकुलीत बसेस व ३ डिझेल बस ऑपरेटरच्या प्रत्येकी एकुण १४४ बसेस ज्यात प्रत्येक ऑपरेटरकडे ७९ मनपा मालकीच्या स्टॅंडर्ड बसेस, ५० नविन मिडी बसेस व १५ नविन मिनी बसेसचा समावेश राहिल अश्या प्रकारे एकुण ०४ ऑपरेटरद्वारे ४८७ बसेसचे संचालन/वाहतुक होणार आहे. या संपुर्ण वाहतुकीचे व्यवस्थापन हे इंटिग्रेटेड बस ट्रान्सपोर्ट मॅनेजमेन्ट दिल्ली (आय.बी.टी.एम.) या ऑपरेटरद्वारे करण्यात येणार आहे. या ऑपरेटरद्वारे बस संचालनाची तिकीट व रोकड कार्यप्रणाली तसेच इटेलिजेंट ट्रान्सपोर्ट सिस्टम द्वारे संपुर्ण नियंत्रण व देखरेख राहणार आहे. या व्यतिरिक्त संपुर्ण वाहतुक व्यवस्थापनाची जबाबदारी व पास वितरण प्रणाली व मनपाचे अन्य पुरवठादार, ज्यात वाहक, ईटीआय मशिन, जिपीएस या सर्व कार्यप्रणाली सदरु ऑपरेटरद्वारे पुढील सहा वर्षाकरीता कार्यान्वित होणार आहे.

आय.बी.टी.एम. ऑपरेटरचे पहिल्या व दुसऱ्या निविदा प्रक्रियेत कुठलाही प्रतिसाद मिळालेला नाही. तथापी तिसऱ्या निविदा प्रक्रियेत फक्त एकमेव निविदाकार मे. Delhi Integrated Multi-Modal Transit System Ltd. यांनी सहभाग नोंदविला आहे. यांच्याद्वारे एकत्रित वाहतुक

व्यवस्थापन ही निविदा व अटी शर्तीमध्ये उल्लेखित असलेल्या सर्व प्रकारच्या पायाभुत सुविधा देणार आहे व याला लागणारे संपुर्ण मनुष्यबळ ज्यामध्ये वरिष्ठ व्यवस्थापक ते तिकीट तपासणीक या वेगवेगळ्या प्रवर्गातील कर्मचारी/अधिकारी अंतर्भूत आहेत. मुळात, मे. Delhi Integrated Multi-Modal Transit System Ltd. यांनी सादर केलेली निविदा रक्कम ही रू. १०९,०१,७२,३२०/- (कोटी) इतकी आहे व मनपाद्वारे नियुक्त प्रकल्पाचे सल्लागार यांनी अंदाजित केलेली रक्कम रू. १०५,१७,४८,०८८/- इतकी असून ती ३.५२ टक्के इतकी कमी अंदाजित आहेत. त्याअनुषंगाने, दिलेले दर कमी करण्याबाबत प्रशासनातर्फे वाटाघाटी केले असता, निविदाकार यांनी नमुद दर यात १ टक्के सवलत देय केलेली आहे. सबब देय सवलत ग्राह्य धरता मुळ निविदा दर रक्कम रू. १०९,०१,७२,३२०/- ही कमी होवून सुधारीत दर रू. १०७,९२,७०,५९७/- या रक्कमेस प्रशासकीय मान्यता प्रदान झालेली आहे. नविन चार बस ऑपरेटर व यांचेवर संपुर्ण सनियंत्रण ठेवणारे आय.बी.टी.एम. ऑपरेटर असे एकूण पाच ऑपरेटर यांचे मासिक भुगतान करण्याकरीता इस्क्रो अकाऊंटची निर्मिती करतांना आराखडयास अनुसरून प्रमुख लेखा व वित्त अधिकारी यांचे अभिमत नुसार सुरूवातीस ०३ महिन्यांचे इस्क्रो अकाऊंट मध्ये किमान रक्कम रू. ६० कोटीची तरतुद आवश्यक आहे. तसेच संपुर्ण वाहतुक सुरू झाल्यानंतर प्रतिमाह रू. १० कोटीचे समायोजन मनपा फंडातून करणे आवश्यक आहे. ही तुट भरून काढण्याकरीता अन्य उत्पादनाचे स्रोत ज्यात पार्किंग, टी.ओ.डी. जाहिरातीद्वारे येणारे उत्पन्न, जागेद्वारे येणारे उत्पन्न याचा समावेश करण्यात आलेला आहे. बस वाहतुक सुरू झाल्यानंतर सुरूवातीचे काळात प्रतिमाह रू. ८.५० कोटीची रक्कम इस्क्रो अकाऊंटमध्ये तरतुद करणे करारनाम्यानुसार आवश्यक राहिल. याकरिता परिवहन व्यवस्थापक यांना संविदा करण्यास प्राधिकृत करण्यासाठी मंजूरी प्रदान करिता, उपरोक्त प्राप्त निविदादरास व प्रस्तावास सहा वर्षांकरिता वित्तीय मान्यतेसह मंजूरी प्रदान करण्याचा प्रश्न समितीने विचारात घेवून प्रस्तावित विषयास एकमताने मंजूरी प्रदान करण्यात येते, परिवहनाचे हे सर्व प्रकल्प यशस्वीरित्या कार्यान्विकरण करण्याच्या व राबविण्याच्या दृष्टीने मनपा निधितुन जी रक्कम वळती करावयाची आहे, त्याकरिता स्थायी समितीची मान्यता घेणे आवश्यक राहिल. आणखी असे की शहर बस संचलनाचे सर्व करारनामे मनपा सभागृहाच्या नोंदीकरिता पाठविण्यास सुद्धा समितीने एकमताने मंजूरी प्रदान केली.

श्री प्रफूल गुडधे :- मा.महापौरजी, हा जो ठराव आहे परिवहन समितीचा त्यामध्ये बस सर्व्हीसेस चालविण्याची मान्यता आहे, टिकिट मशीनच्या खरेदीच्या संदर्भात उल्लेख नाही असेल तर तो प्रशासकीय मान्यतेच्या संदर्भातील आहे. निविदेला अंतिम मान्यता घेतलेली नाही, ही गोष्ट खरी आहे काय ? परिवहन समितीची प्रशासकीय मान्यता आपण घेतली काय?

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, टेंडर ओपन झाल्यानंतर ती फाईल परिवहन समितीकडे गेली काय ? या महानगरपालिकेमध्ये प्रशासकीय मान्यता घेतल्यानंतर टेंडर मंजूरीकरिता समितीची मंजूरी घ्यावी लागते आपण ती मंजूरी घेतली नाही.

परिवहन व्यवस्थापक:- मा.महापौरजी, एकत्रित बॅकडेट मध्ये परमिशन घेतलेली आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, निगम आयुक्तांनी खुलासा करावा बॅकडेटमध्ये आपण निविदेला प्रशासकीय मान्यता घेवू शकतो काय ? मा.महापौरजी, अश्याप्रकारची मान्यता घेता येत नाही, बॅकडेटमध्ये आपण मान्यता कशी घेणार आहे.

श्री.प्रविण भिसीकर :- मा.महापौरजी, टेंडर झाले, टेंडर मान्यतेकरिता समितीपुढे नस्ती आलेली नाही. कारण कि त्या समितीचा मी सदस्य आहे. हे टेंडर जेव्हा झाले ते मागच्या समितीच्या रेजीम मध्ये झाले चालु आर्थिक वर्षाची जी समिती गठित झाली त्याच्यापुढे हा प्रस्ताव कधीही आलेला नाही. टेंडर झाल्यानंतर टेंडरमध्ये दोन कंपन्या क्वॉलिफाय झाल्या. टेंडरचे नियम काय आहे कि कितीही कंपन्या आल्या पाहिजे. त्याच्यानंतर त्या टेंडरमध्ये जी पहिल्या नंबरची कंपनी होती, ती ब्लेक लिस्टेड झाली. मग दुस-या कंपनीला यांनी परस्पर वर्कआर्डर दिले. असे होते काय ? महानगरपालिकेचे

नियम काय आहे. तीन बिडर्स आले नाही तर मिनिमम तीन वेळेस टेंडर निघाले पाहिजे. परंतु यात असे नाही होत आहे. एकच वेळेस टेंडर निघत आहे, दोनच कंपन्या येत आहे व एक कंपनी डिसक्वॉलिफाय होत आहे. त्याच्यानंतर रि-टेंडर न करता असे वर्क आर्डर देता येते काय ?

श्री नितीन साठवणे :- पार्ईट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, 1.54 लक्ष रुपयांचे हया ज्या मशीनी खरेदी केल्या गेल्या. एक मशीन 19 हजार रुपयांची आहे आणि नेटवर चेक केले तर 8 ते 9 हजार रुपयांच्यावर मशीन नाही आहे 19,000 हजारच्या जवळपास आपण मशीन घेवून राहिलो आहे आणि बल्कमध्ये घेतली तर आणखी स्वस्त पडावयास पाहिजे होती, हा ही एक माझा मुद्या आहे याच्यावर यांनी स्पष्टीकरण द्यावे.

श्री.प्रफुल गुडधे :- मा.महापौरजी, परिवहन समितीच्या संदर्भामध्ये ज्या चर्चा होवून राहिल्या त्याच्यामध्ये एकंदरीत तीन मुद्दे याठिकाणी चर्चेमध्ये आलेले आहे, पहिला मुद्या होता कि, बंद काळातील दरम्यानची पेनॉल्टी आकारली पाहिजे कि नाही त्या संदर्भात आम्ही आमची भूमिका मांडली आहे कि पेनॉल्टी त्या कंत्राटदार कंपनीच्या माध्यमातून वसूल करण्यांत यावी. आमची दुसरा मुद्या आहे कि परिवहन समितीची मान्यता न घेता तिकिट मशीन खरेदी केल्या गेल्या असेल तर संबंधित व्यवस्थापकावर कार्यवाही करण्यांत यावी, त्यांना तात्काळ पदमुक्त करण्यांत यावे. तीसरा मुद्या असा आहे कि तिकिटचा घोटाला झाला होता, तीसरा जो महत्वाचा मुद्या असा आहे कि, वर्तमानपत्रामध्ये बातमी आली कि, तिकिट मशीनच्या कार्डचा गैरवापर करून महानगरपालिकेचे उत्पन्न बुडविलेले आहे त्या संदर्भात परिवहन व्यवस्थापकांनी आपला मत याठिकाणी ठेवावे.

श्री.प्रविण भिसीकर :- मा.महापौरजी, परिवहन व्यवस्थापक हे डेप्युटेशनवर येथे आलेले आहे, आपण जी बस सेवा चालवित आहे त्याच्यामध्ये 53 प्रतिशत आपण घाटयामध्ये आहे, यांनी हा तोटा कमी करण्याबाबत कोणती उपाययोजना समितीपुढे आणली आहे. तोटा कमी करण्याविषयी आम्ही समितीच्या माध्यमातून प्रशासनाकडे जे विषय ठेवले त्या संदर्भात एकाही विषयाची अंमलबजावणी झालेली नाही. मग कोणाकडे सुनावणी करायची, याची माहिती देण्यांत यावी.

श्री.तानाजी वनवे:- मा.महापौरजी, या संबंधामध्ये बरीच चर्चा आता झाली आणि माझा ही प्रश्न याच्याशी संबंधित आहे, मी विचारलेल्या प्रश्नाचे उत्तर दिलेले आहे शहर बस वाहतुकीचे म.न.पा.चे प्रकल्प सल्लागार डी.आर.ए. असोसिएट यांनी म.न.पा.ला चुकिची संकल्पना देवून महानगरपालिकेला आर्थिक तोटयात टाकले याबाबत परिवहन विभागाकडून मिळालेले उत्तर असे आहे कि शहर बस वाहतुक ही कायम तोटयात चालणारी सेवा असून आर्थिक तोटा कमी करण्याबाबत उपाययोजना करण्यांत येतात ही सेवा न नफा न तोटा या तत्वावर चालविणे शक्य होत नाही, नफा तोटाची जबाबदारी प्राधिकारी अर्थात महानगरपालिकेची आहे. माझा प्रश्न असा आहे कि आपण किती तोटा सहन करण्याचे महानगरपालिकेनी ठरविले आहे, याचे व्यवस्थापकांनी उत्तर द्यावे.

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, सर्वप्रथम मा.सदस्य, श्री साठवणे साहेब यांनी विचारलेल्या प्रश्नाचे उत्तर मी देत आहे, बोगस कॅश कार्डमध्ये झालेल्या घोटाल्यामध्ये एकुण 35 वाहक लिप्त असल्याचे स्पष्ट झाल्याने त्या 35 वाहकाना सेवेतून कमी करण्यांत आलेले आहे. याबाबत पोलिस स्टेशनमध्ये देखील रिपोर्ट करण्यांत आलेली आहे. परिवहन विभागाचे जावक क्र.824 दिनांक 15/12/2017 अन्वये तसेच संबंधित कंपनीकडून पुर्ण रक्कम 12 लाख 50 हजार रूपये आपण नोव्हेंबर पेड इन डिसेंबरच्या बिलामध्ये पुर्ण वसूल केलेली आहे.

श्री नितीन साठवणे :- पार्ईट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, कॅश कार्ड कोणत्या कंपनीला बनविण्यास दिले होते.

परिवहन व्यवस्थापक(श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, दुस-या प्रश्नाचे उत्तर तोटा निश्चितच कमी झाला पाहिजे. या स्थितीमध्ये डिसेंबरची पोजीशन पाहता नागपूर महानगरपालिकेचा तोटा रूपये हे 28 रूपये प्रति कि.मि. इतका आहे. मी सभागृहाच्या निदर्शनास आणुन देवु इच्छितो कि, आपल्यापेक्षा तोटयाच्या जो प्रति किलोमीटर तोटयाचा जो आंकडा आहे, तो बैंगलोर व पुणे या दोन शहराचा आपल्यापेक्षा कमी आहे. या व्यतिरिक्त आपण कलकत्ता, अहमदाबाद व इतर शहराचे

ईअरली पॅटर्न बघितले तर जवळ जवळ आपल्यापेक्षा यांचे तोटे जास्त आहे.येणा-या कालावधी मध्ये परिवहन विभाग हा तोटा कमी करण्याचा जास्तीत जास्त प्रयत्न करेल.

श्री नितीन साठवणे :- मा.महापौरजी, कॅश कार्ड कोणत्या कंपनीला बनविण्यास दिले होते, कॅश कार्डमुळे घोटाळा झाला आहे, ती निविदा कोणत्या कंपनीला दिली होती, याचा काहीच उल्लेख केलेला नाही.

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, पार्ट ऑफ इंफार्मेशन, मा.सदस्यांनी घोटाळ्याच्या विषयी विचारलेला आहे तर घोटाळा कधी झाला व कोण-कोणत्या तारखेला झाला याची माहिती आपण दयावी.

परिवहन व्यवस्थापक (श्री.शिवाजी जगताप) :- मा.महापौरजी, मुळातच 35 वाहकाच्या संगनमताने साधारणतः जून 17 च्या शेवटी या घोटाळ्याची सुरुवात झालेली होती. नोव्हेंबर महिन्यात 12 तारखेला संशयास्पद तिकिट सापडल्यामुळे त्याची पुर्ण तपासणी केल्यानंतर त्याच्यामध्ये पुर्ण रक्कम इनव्हेलीड केली आणि 35 वाहक याच्यामध्ये लिप्त होते.

श्री नितीन साठवणे :- पार्ट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, वाहक लोक जे आहे ते 7-8 हजार रुपयांनी काम करणारे कर्मचारी आहे त्या कॅशकार्डमध्ये कुठलीही अशी यंत्रणा राबवू शकत नाही कि त्याच्यामधून ते काही पैश्यांचा हेरफेर करेल. ही जी कंपनी कॅशकार्ड करिता नेमलेली होती त्या कंपनीच्या मार्फत हा घोटाळा झालेला आहे. वाहकावर जबाबदारी टाकून हे आपले हाथ वर करून राहिले आहे. परिवहन व्यवस्थापक हे परस्पर आपले निर्णय घेतात व आपल्या पध्दतीने कार्य करतात. का बरे यांचे निलंबन करू नये ही बाब मी सभागृहात आज विचारीत आहे.

श्री.नरेंद्र(बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी, आपल्याला महानगरपालिकेमध्ये बस चालवायची असेल तर महानगरपालिकेचे जे चेकर्स आहे त्या चेकर्सना उद्याच्या उद्या रोखले पाहिजे. मग उद्यापासून आपले प्रॉफिट होईल, महानगरपालिकेमध्ये चेकर्स हा रोजचे पांच हजार रुपये घरी नेते आणि कंडक्टरनी पैसे दिले नाही तर त्याच्यावर कोणता न कोणता आरोप करून कार्यवाही करण्यांत येते. म्हणून याकरिता चेकर्सवर विशेष लक्ष देण्यांत यावे.

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन, यामध्ये परिवहन विभागाच्या संदर्भात सभापती परिवहन यांना प्रशासन सहकार्य करीत नाही. काही पत्रकार मंडळी त्याठिकाणी गेले होती त्यावेळेस डिम्स कंपनीच्या लोकांनी पत्रकारांनाही धमक्या दिल्या. म्हणून पहिल्यांदा डिम्स कंपनी आणि त्यांच्या कारभार आणि हया परिवहन व्यवस्थेसंबंधी नफयामध्ये ही चालविण्याचे काम अमरावतीचे जे अंबा माल वाहतुक आहे, त्यांनी अमरावतीमध्ये फायद्यामध्ये ही बस सेवा चालवून दाखविली होती. आपल्या या महानगरपालिकेत आपण जनतेचा जो पैसा आहे तो आपण बससेवेमध्ये टाकतो आहे, परंतु किती तोटामध्ये आपण ही बससेवा चालविली पाहिजे, याची अपर आयुक्तांमार्फत चौकशी करण्यांत यावी.

श्री संदिप जोशी :- मा.महापौरजी, परिवहन विभागाबद्दल मा.सदस्यांनी अनेक प्रकारचे प्रश्न याठिकाणी उपस्थित केले. एकंदरीत ज्यापध्दतीची माहिती या ठिकाणी मिळाली त्या माहितीबद्दल निश्चितच प्रश्न होत आहे. एकतर इतके सोपे विषय आहे, आपण ज्यावेळेस टेंडर काढतो, टेंडर झाल्यानंतर त्या टेंडरची मंजूरी ही परिवहन समितीची घ्यावयास पाहिजे ती परवानगी देखील घेण्यांत आलेली नाही, हे देखील याठिकाणी स्पष्ट होत आहे. म.न.पा.च्या उत्पन्नाच्या बद्दल मा.सदस्यांनी विषय ठेवले कि पेनॉल्टी देत असतांना 40 प्रकारचे क्लॉजमध्ये संपाचा समावेश नसतांना आम्हाला एखाद्या प्रायव्हेट कंपनीच्या बाजूने उभे राहावे लागते किंबहुना अधिकारी किंवा प्रशासन त्या प्रायव्हेट कंपनीला पाठीशी घालते कि काय ? यापध्दतीची भुमिका देखील या ठिकाणी उत्पन्न झालेली आहे. हे करीत असतांना परिवहन समिती अध्यक्षांचे वारंवार प्रशासनाला पत्रे गेले, माझ्या माहितीप्रमाणे परिवहन समिती अध्यक्षांनी जवळपास 38 ते 47 पत्रे या ठिकाणी प्रशासनाला दिलेले आहे. त्या परिवहन समितीच्या अध्यक्षांच्या पत्रावर देखील कुठल्याही प्रकारची कार्यवाही परिवहन व्यवस्थापक करीत नाही ही अत्यंत दुर्दैव्याची बाब आहे. आणि त्यामुळे हे सर्व करीत असतांना तोटा कमी करण्यासाठी ज्या काही सूचना होत असतील त्या सूचनांचा खरोखरच आपण कुठल्या पध्दतीने

उपयोग करतो त्याचा देखील विचार करणे अत्यंत गरजेचे आहे, यामध्ये एका उत्तरामध्ये सहज लक्षात येते कि, ज्यावेळी मा.विरोधी पक्षनेते श्री.तानाजी वनवे यांनी प्रश्न केला कि महानगरपालिकेच्या कंसल्टंटनी चुकिची संकल्पना देवून म.न.पा.ला आर्थिक तोटयात टाकले आहे. त्याच्या उत्तरावर प्रशासनानी उत्तर दिले आहे कि शहर बस वाहतुक सेवा ही कायम तोटयात चालणारी सेवा असून आर्थिक तोटा कमी करण्याकरिता उपाययोजना करण्यांत येतात, परंतु ना नफा ना तोटा या तत्वावर चालविणे शक्य होत नाही. म्हणजे आम्ही पहिल्या दिवसापासून हे समजून चालत असू कि हे होणारच नाही तर आपण निश्चितच हे करणार नाही. आपण या ठिकाणी सांगतो कि पुणे व बॅंगलोर पेक्षा आमचा तोटा कमी आहे. ही काही पाठ थोपटण्यासारखी गोष्ट नाही, ही दुर्दैव्याची बाब आहे. याठिकाणी एका वेळी महानगरपालिकेच्या मा.सदस्यांना आप-आपल्या प्रभागात काम करण्यासाठी विकास निधी हा कमी मिळतो आणि त्याचवेळी दुसरीकडे आपण परिवहन सेवेला तोटा वाचविण्यासाठी वर्षाला 60 ते 65 कोटी रूपये देतो ही अत्यंत दुर्दैव्याची बाब आहे. आणि ज्यांच्यावरती ही व्यवस्था चालविण्याची संपुर्ण जबाबदारी आहे, ती मग डिम्स असेल, त्यांची वर्तवणूक असेल, परिवहन व्यवस्थापकाची वर्तवणूक असेल माझी आपल्याला विनंती आहे कि, याठिकाणी मा. सदस्यांनी उपस्थित केलेले सर्व प्रश्न विचारात घेता या संपुर्ण विषयाची चौकशी अतिरिक्त आयुक्ताच्या दर्जाच्या अधिका-यांच्यातर्फे करावी आणि त्यांनी केलेल्या चौकशीचा अहवाल पुढील सभागृहामध्ये ठेवण्यांत यावा.

महापौर :- मा. सत्तापक्ष नेता यांनी सुचविल्याप्रमाणे अति.आयुक्त यांनी संपुर्ण प्रकरणाची चौकशी करून त्याचा अहवाल सभागृहाच्या पटलावर ठेवावा. चौकशीअंती या कामात अनियमितता आढळली तर जबाबदारी निश्चित करून संबंधितांवर योग्य ती कार्यवाही करण्यात येईल.

प्रश्न. क्रमांक 58 :- मुलचंद कुंभारु अडीकणे हे दि. 02.09.1985 पासून ऐवजदार म्हणून म.न.पा. मध्ये कार्यरत होते. दि. 15.05.1994 ला प्रकाशित कामगारांच्या सेवाज्येष्ठता यादीत संदर्भात प्रश्न

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौर महोदया, मा.आरोग्याधिका-यांनी मला प्रश्नाचे उत्तर दिले आहे माझा जो दुस-या क्रमांकाचा प्रश्न होता, त्यामध्ये त्यांनी सांगितले कि 15.5.1999 मध्ये मुलचंदकुमार अडिकणे या ऐवजदाराचा नांव सेवाज्येष्ठता यादीमध्ये होते परंतु 2002 च्या यादीमध्ये त्याचे नांव नव्हते. याचे उत्तर लिहीतांना यामध्ये फिरवाफिरवीचे उत्तर लिहीले आहे. मला प्रश्न विचारावयाचा आहे कि 1999 मध्ये त्यांचे नांव सेवाज्येष्ठता यादीमध्ये होता तर मग 2002 मध्ये त्यांचे नांव गायब का झाले.

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार):- मा.महापौरजी, दि.15.5.1999 ला सर्व झोनमधुन सिनिअरीटी मागविण्यांत आली त्यावेळेस मुलचंद कुमारु अडिकणे यांचे नांव सेवाज्येष्ठता यादीमध्ये होते, त्यानंतर 2001 ला त्यांची बदली झोन क्रं. 2 मधुन झोन क्रं. 9 मध्ये करण्यांत आली.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौर महोदया, मी जो प्रश्न याठिकाणी केलेला आहे. 1999 मध्ये अडिकणेचे नांव होते, मग 2002 मध्ये का नव्हते, या दरम्यानच्या काळामध्ये असे कोणते पाणी वाहुन गेले कि 1999 मध्ये असलेले नांव 2002 च्या यादीमध्ये सापडत नाही.

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार) :- मा.महापौरजी, 2001 मध्ये जेव्हा अंतिम यादी परत तयार करण्यांत आली तेव्हा नस्तीमध्ये त्याचा रद्य म्हणुन उल्लेख आहे.

श्री.धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौरजी माझे म्हणणे आहे की आपण 1999 मध्ये एक यादी तयार केली व 2002 ला परत दुसरी यादी तयार केली, ही बाब प्रशासनाला मान्य आहे काय ?

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार):- मा.महापौर महोदया, जेव्हा सिनिअरीटी यादी 1999 ला तयार करण्यांत आली, त्याच्यानंतर परत दुसरी यादी 2002 मध्ये तयार करण्यांत आली त्यांची बदली झोन क्रं. 9 मध्ये झाली होती.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौरजी, पहिली यादी तयार असतांना दुसरी यादी तयार करण्याची गरज का भासली?

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार):- मा.महापौरजी, जेव्हा 1999 मध्ये यादी तयार करण्यांत आली त्याच्यानंतर परत नांवे मागविण्यांत आली.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौरजी, नांवे का मागण्यांत आली, पहिल्या यादीमध्ये घोळ होता काय ?

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार):- पहिल्या यादीमध्ये 670 लोकांची सिनिआरीटी मागविण्यांत आली होती, सिनिआरीटीप्रमाणे यांचा नांव 177 वर होते,

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौर महोदया, पहिल्या यादीमध्ये घोळ होता काय ? ज्यामुळे आपल्याला दुसरी यादी तयार करण्याची गरज पडली.

श्री.सुनिल अग्रवाल :- मा.महापौरजी, पार्ट ऑफ इंफार्मेशन, 1999 मे जो यादी आपने बताया कि बनाई गयी थी, उसमे आब्जेक्शन बुलाये गये थे क्या ? और आब्जेक्शन के बाद मे 2000 के फिरसे यादी प्रकाशित की गयी थी क्या ? जैसा मा.सदस्य का सवाल है कि बार बार आप यादी बना सकते है क्या ? इसके बारे मे भी आप खुलासा किजीये जैसा कि ड्राफ्ट यादी बनाई गयी होंगी तो आब्जेक्शन मंगवाने के बाद फायनल यादी बनी होंगी और फिर उसके कुछ साल बाद आप यादी बनाते है, और यह जो बार बार आप यादी बनाते है यह सही है या गलत है, यांनी वह 1999 के जो यादी थी वह ड्राफ्ट यादी थी और ड्राफ्ट यादी मे जो भी आब्जेक्शन आये होंगे उसकी सुनवाई करने के बाद मे ऑफिस के व्दारा अंतिम यादी बनाई गयी क्या ?

आरोग्याधिकारी एस.(श्री.दासरवार):- मा.महापौरजी, 1999 मे जो यादी बनाई गयी थी वह ड्राफ्ट यादी थी, 2002 मे जेव्हा फायनल यादी तयार करण्यांत आली त्याच्यामध्ये आब्जेक्शन मागविण्यांत आले होते.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- 1999 मध्ये आपण जी सेवाज्येष्ठता यादी तयार केली त्याच्यामध्ये किती आब्जेक्शन आले होते. आणि ते कोणी घेतले होते.

अति.उपायुक्त (श्री. दांडेगांवकर) :- मा.महापौरजी, या संदर्भातील बाबीचे अवलोकन केले असता असे आढळून येते कि ती ड्राफ्ट यादी होती, 1999 ची त्यामध्ये 177 व्या नंबरवर श्री अडिकणे यांचे नांव होते. परंतु त्याच्यानंतर जी यादी 2002 ला प्रसिध्द झाली. त्याच्या दरम्यानच्या काळात त्याच्या नावांसमोर फक्त रद्य लिहिलेला असे अभिलेखात आढळते. आणि त्या अनुषंगाने जेव्हा अभिलेखाची पळताडणी केली त्यावेळेस असे आढळून आले कि त्यांची झोन नंबर 9 मध्ये बदली झाली होती 31-01-2001 ला आणि त्यानंतर ते कामावर आहेत का हे पाहिले तर ते कोणत्याही झोनमध्ये मस्टरवर ते कामावर असल्याचे आढळले नाही. त्या संचितेमध्ये याचे काही कारण लिहिलेले नाही, पण परिस्थितीजन्य पुराव्यानुसार असे दिसते की त्यांची बदली झाल्यानंतर ते रुजु झाले नाही आणि त्यामुळे त्याच्या नावासमोर रद्य लिहिलेला आढळला, ही परिस्थिती आहे.

श्री. धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौर महोदया, जे उत्तर आरोग्याधिका-यांनी दिले तेच उपायुक्तांनी दिले त्याच्यात काय फरक आहे आणि मला जे लेखी उत्तर दिले त्याच्यात काय फरक आहे. मी जो प्रश्न केला त्याचे उत्तर मला येथे देवु शकणार आहे काय ? मा.महापौर महोदया, प्रश्न असा आहे कि 1999 मध्ये जर आम्ही सेवाज्येष्ठता यादी तयार करतो तीच यादी आपण रिकंडीशन 2002 मध्ये करतो काय ? आणि त्यासाठी आपल्याला तीन वर्षांचा कालावधी जावु द्यावा लागतो काय ? हा पहिला प्रश्न, दुसरा प्रश्न असा कि, आता 2018 सुरु आहे मग सन 2000 पासून 2008 पर्यंतच्या या 16 वर्षांच्या कार्यकाळामध्ये आपण कितीदा आपण सेवाज्येष्ठता यादी तयार केली आणि कितीदा दुरुस्त केली. हा माझा दुसरा प्रश्न आहे. आणि तीसरा जो माझा प्रश्न आहे तो अत्यंत महत्वाचा आहे, फेब्रुवारी 2002 मध्ये महानगरपालिकेच्या सार्वत्रिक निवडणुका झाल्या होत्या, आणि या निवडणुकीच्या दरम्यान जे काही ऐवजी कार्ड देण्यात आले होते प्रशासनाच्या माध्यमातून, त्यावेळेस हजारो बोगस कार्ड प्रत्यक्षात पोलिसांनी शोधुन काढले होते, पोलिस चौकशी झाली होती, या सगळ्या घोळाचा फायदा घेवून प्रशासनानी ती यादीच बदलून घेतली आणि आपले माणसे घुसवले हे खरे आहे काय ?

अति.उपायुक्त (श्री.दांडेगांवकर):- मा.महापौर महोदय, तत्कालीन परिस्थितीमध्ये असे काही घडले

असेल असे आम्हाला अभिलेखावरून आढळले नाही.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौरजी, सन 2002 मध्ये पालिस कार्यवाही झाली होती कि नाही. पोलिस कार्यवाहीचा आपल्या दफ्तरी उल्लेख का आढळून येत नाही.

अति.उपायुक्त (श्री.दांडेगांवकर):- मा.महापौरजी, आमच्या कडे जी संचिता पडल्या आहे. त्याच्यामध्ये 300 ऐवजदारांना तत्कालीन परिस्थितीमध्ये परमनंट करावयाचे होते. त्यामध्ये श्री.अडकिणे यांचा पहिल्या यादीत नांव आहे परंतु दुस-या यादीत त्यांचे नांव नाही. त्याच्यामध्ये येवढेच स्पष्ट करतो कि, त्यांच्या नावांसमोर रद्य लिहिलेले आहे. पण त्याची कारणमिमांसा आज रोजी आढळून आली नाही म्हणून मी त्याच्यावर काही भाष्य करू शकत नाही.

श्री धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौर महोदया, माझा प्रश्न असा आहे कि सन 2002 मध्ये जी यादी तयार करण्यांत आली होती, त्याच्यात घोळ करण्यांत आला आहे. काही विशिष्ट माणसांना घेण्यासाठी किंवा काही विशिष्ट हेतुने काम करण्यासाठी ही यादी आणण्यांत आली. 1999 मध्ये एक यादी ठेवायची त्या अशिक्षित माणसांना काय कळणार आहे कि आब्जेशन घ्यावा लागते. जो काही नागपूर महानगरपालिकेच्या प्रशासनाच्या स्तरावर सिनिअरीटी इंस्पेक्टर या पदाचा घोळ झाला, कोणाला यादीत ऐवजदार म्हणून घुसळून टाकायचे, कोणाला जमादार करायचे कोणाला प्रमोशन द्यायचे कोणाला द्यायचे नाही या पध्दतीचा घोळ झाला. सन 2002 मध्ये याच पध्दतीचा घोळ झाला आहे.

श्री संदिप जोशी :- मा.महापौरजी, श्री मुलचंद अडकिणे यांच्या अशिक्षितपणाचा फायदा घेवून या पध्दतीने सेवाज्येष्ठता यादीमध्ये घोळ करण्यांत आला आहे. माझे असे म्हणणे आहे कि ऐवजदारांवर या पध्दतीचा अन्याय होवु नये, तो मुलगा आज रिक्षा चालवित आहे इतकी त्याची स्थिती आज भयानक आहे. आणि याच्यामध्ये आपण आदेश द्यावे श्री.दांडेगांवकर या विभागाचे प्रमुख आहे त्यांच्या मार्फत चौकशी करून सहानुभूतीपूर्वक त्याचा विचार करण्यांत यावा, त्यांची केस नियमाप्रमाणे असेल तर त्यांना आपल्या सेवेमध्ये समावेश करण्यांत यावे.

महापौर :- अति.उपायुक्त श्री.दांडेगांवकर यांनी व्यवस्थित चौकशी करून अन्यायपीडीत व्यक्तिला न्याय द्यावा.

प्रश्न क्रं. 60 :- नागपूर महानगरपालिकेच्या सिमा क्षेत्रात असलेल्या जिर्ण इमारती पाडण्याकरिता न्यायालयाचे आदेश होऊन सुद्धा या जिर्ण इमारती पाडण्याची कारवाई महानगरपालिकेने केली नसल्याने यास जबाबदार अधिकारी कोण? संदर्भात प्रश्न.

श्री किशोर जिचकार :- मा.महापौरजी, आपण हा प्रश्नोत्तराचा तास एका तासाचा केला आहे येवढ्या मोठ्या नागपूर शहराकरिता हा एका तासाचा वेळ अपूरा आहे. याच्याबद्दल सभागृहाने निर्णय घ्यावा. मा.महापौरजी, नागपूर शहराच्या जेवढ्या जिर्ण इमारती आहे, त्याच्या संदर्भात होता आणि उत्तर जे मिळाले आहे कि आमच्याकडे कुठलेही प्रकरण प्रलंबित नाही. प्रत्येक झोनमध्ये जिर्ण इमारतीचे सगळे प्रस्ताव प्रलंबित पडलेले असतांना अश्याप्रकारचे उत्तर जर प्रशासन देत असेल तर यांना कुठल्या दुस-या कामात आपण लावले पाहिजे. बहुतेक सर्व झोनमध्ये जिर्ण इमारतीचे प्रश्न प्रलंबित आहे. किरायेदारांना वाचविण्याकरिता कुठली ही कार्यवाही आपला विभाग करीत नाही. असा आरोप माझा याटिकाणी आहे आणि जिर्ण इमारतीचा प्रश्न मी जो टाकला त्याच्या उत्तरामुळे माझे समाधान झाले नाही. 20 तारखेला आपली सभा होती 19 तारखेला त्यांना पत्र देण्यांत आले कि तुम्हीच कार्यवाही करा, असे लिखित उत्तर दिले आहे.

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन मा.सहा.आयुक्तांना अश्या जिर्ण इमारतीच्या संबंधामध्ये मी प्रत्यक्षात बोललो. एक अत्यंत गरीब माणुस आहे त्याचे त्याटिकाणी पुर्ण घर पडलेला आहे. त्यांनी फोटोग्राफी सगळी दिलेली आहे, त्याच्या येथे समोर एक माणुस चक्की चालवितो त्याला राहायला जागा नाही, आणि त्याच्यामध्ये कोर्टाचे आदेश आहे, असे अनेक उदाहरणे आहे, त्या संबंधाने अश्या ज्या ज्या जिर्ण इमारती असतील मागच्यावेळेस हा प्रश्न सभागृहामध्ये आला होता, त्यावर न्यायालयाने आदेश दिले असेल तर तात्काळ कार्यवाही करावी. अशी माझी आपणांस विनंती आहे.

श्री.दयाशंकर तिवारी :- पाईट ऑफ इंफॉर्मेशन, मा.महापौरजी, ऐसा कुछ सर्कुलर प्रशासन ने निकाला है क्या ? जिर्ण इमारत को तोड़ने से पहले स्ट्रक्चरल इंजिनियर से उसकी अनुमती लेना चाहिये। इस बात की जानकारी सभागृह में दी जाये। मा.महापौरजी, स्ट्रक्चरल इंजिनियर के विचार में आये बगैर बिल्डींग नहीं तोड़ना इस प्रकार की प्रक्रिया प्रशासन में शुरू की, अगर शासन ने यह निर्णय लिया है तो कोई अडचन नहीं किरायेदार को खाली कराने के लिये मकान मालिक यह हथखंडे अपनाते हैं। परंतु नागपूर महानगरपालिका ने हमारे जो स्ट्रक्चरल डिजाईनर हैं उनकी यादी हमने बनाई है, उनकी मिनिमम फीस निश्चित कर देना चाहिये। कारण अगर किसी गरीब आदमी का घर गिर रहा है, तो उससे अगर वह एक लाख रुपये मांगता है और रिपेअरिंग करके वह उस एक लाख रुपये में मकान बना सकता है तो रिपेअरिंग की अनुमती के लिये एक लाख रुपये स्ट्रक्चरल इंजिनियर को नहीं दे सकता। मा.महापौरजी, यह नहीं है तो बहुत अच्छी बात है अगर यह है तो उसकी मिनिमम फीस हमने निश्चित कर देना चाहिये, ऐसा मेरा इस सभागृह के माध्यम से निवेदन है।

महापौर :- स्ट्रक्चर इंजिनियरची अनुमती घेवून ही कार्यवाही करण्यात यावी. याकरिता स्ट्रक्चर इंजिनियरची फी निश्चित करण्यात यावी.

प्रश्न क. 61:- डिप्टी सिग्नल येथील संजय गांधी प्राथमिक शाळेची संपूर्ण माहिती संदर्भात प्रश्न.व

प्रश्न क. 63:- सन 2018-2019 इस शैक्षणिक सत्र में नागपूर शहर की जनता की माँग के अनुसार म.न.पा. में पायलट बेसीस पर इंग्रजी माध्यम की नई स्कूल संदर्भात प्रश्न

श्री.मोहम्मद जमाल :- मा.महापौरजी, सर्वप्रथम तो मैं आपसे यह जानना चाहूंगा की सभागृह के अंदर पुछे गये प्रश्नो का महत्व क्या होता है। क्या यह महत्व नगरसेवको का चेहरा देखकर किया जाता है, या फिर सत्तापक्ष के हिसाब से तय किया जाता है कि जो प्रश्न यहां पुछे जाते हैं उसपर अंमलबजावणी क्या होती है। मैं पिछले तीन सभागृह में शिक्षण के स्तर को उंचा उठाने के लिये प्रश्न पुछ रहा हूँ, मुझे लगभग लगभग हर बार वही मिलाजुला जवाब मिलता है मैंने इस बार फिर से वही प्रश्न डाला। नागपूर महानगरपालिकाने शहरवासी नहीं बल्कि देशवासीयो की मानसिकता को देखते हुऐ अंग्रेजी माध्यम की स्कुले खोलने के लये क्या उपाययोजना की है, मैंने उसमें स्पेशली पुछा था। मुझे जवाब मिला कि, 2014-15 में हमने इस सिलसिले में प्रयोग किया था परंतु इसमें लोगो की जो अपेक्षित चाहत थी वह हमको नहीं मिली। इसलिये इस प्रकल्प को हमने सेमी इंग्लिश के माध्यम में ट्रांसफर कर दिया। मा.महापौरजी, नागपूर महानगरपालिका में एक बनातवाला स्कुल है जो प्रभाग क्रमांक 6 में चालु है और अभी उसकी नयी इमारत प्रभाग क्रमांक 2 में बन रही है, करोडो रूपयो की लागत से मैं आपको बताना चाहूंगा कि वहां पर इस साल के सत्र के कक्षा 9 का अप्रुव्हल नागपूर महानगरपालिका को दिया गया है। सबसे बडी बात तो यह है कि हमारे यहां अंग्रेजी माध्यम के स्कुलो के लिये अनुदान नहीं मिलता है, इसी सभागृह में मैंने सत्तापक्ष के नेता से अनुरोध किया था कि राज्य सरकार को एक निवेदन दिया जाये जिस तरीके से उर्दु, हिंदी और मराठी मिडियम को अनुदान दिया जाता है, उसी तरीके से अंग्रेजी माध्यम के स्कुलो को भी अनुदान दिया जाये। पता नहीं इस बात का प्रस्ताव आपकी तरफ से प्रशासन की तरफ से राज्य सरकार को गया या नहीं। इसलिये मैंने पहिली बात कही के मा.सदस्य जो प्रश्न रखते हैं उनका महत्व क्या होता है। मा.महापौरजी, आज लगभग हजार के उपर पटसंख्या बनातवाला स्कुल की है मैं आपको ग्यारंटी देता हूँ कि पिछले नव साल से वह स्कुल शुरू होने के बावजूद वहां का शिक्षण का स्तर बिलकुल नहीं बढ़ा क्योंकि वहां पर जो टिचर पढारहे है वह उर्दु, हिंदी और मराठी मिडियम के है। आज वहां पर 9 वी कक्षा में बच्चा जाने के बाद भी इंग्लिश के उसको वर्ड तक नहीं आते, ऐसा इंग्लिश भाषा का शिक्षण देने का अधिकार हमको है क्या ? वहां बच्चा जाकर टोटल खराब हो, वहा कुछ नहीं सीख रहा हैं।

श्रीमती. वैशाली नारनवरे :- मा.महापौरजी, पाईट ऑफ इंफॉर्मेशन, हा प्रश्न शिक्षणाशी निगडित आहें, शिक्षणापासून कोणीही वंचित राहु नये असे मला वाटते. प्रत्येक पालकांना वाटते कि आपल्या

पाल्यांनी अंग्रेजी माध्यमातुन शिकावयास पाहिजे. परंतु आज परिस्थिती अशी आहे कि महगाई वाढल्यामुळे पालक हे खर्च उचलु शकत नाही. आज भारताला गरज आहे आदर्श नागरिकांची आणि हुशार नागरिकांची, तो घडतो शाळेतुन आणि ती त्याची पहीली पायरी आहे. आणि गोरगरीब लोक आपल्या पाल्यांना उच्च शिक्षण किंवा इंग्रजी मिडीयमचे शिक्षण देवु शकत नाही. ही सोय महानगरपालिकेच्या शाळेतुन व्हायला पाहिजे असे मला वाटते. मानव हा कृतीशिल आहे आपल्या महानगरपालिकेच्या शाळेमध्ये इंग्रेजी माध्यमाचे सत्र सुरु व्हावयास पाहिजे, जे मा.सदस्य इच्छुक आहे, आपल्या प्रभागातील शाळेला दत्तक घेण्यासाठी त्यांनी आपल्या प्रभागात इंग्रेजी माध्यमाची शाळा सुरु करावयास पाहिजे. या कामामुळे महानगरपालिकेच्या शाळेचा स्तर वाढेल, पटसंख्या वाढेल, इच्छुक मा.सदस्यांनी आपल्या प्रभागातील शाळा दत्तक घेण्यासाठी येणा-या सत्रापासून अंग्रेजी माध्यमाचे मिडियम सुरु करावयास पाहिजे. याकडे लक्ष देण्यांत यावे.

श्री मोहम्मद जमाल :- मा.महापौरजी, मैं आपसे यह कह रहा था कि, बनातवाला स्कूल की स्थिती ऐसी है कि वहां पर मराठी,हिंदी,उर्दु मिडियम के टिचर होने के कारण कही न कही उनको इंग्लिश मिडियम का अनुभव कम होने के कारण वहां के बच्चो को ठिक तरह से शिक्षित नही कर पा रहे है। इसलिये मैंने अपना एक प्रपोजल रखा शिक्षण विभाग के सामने क्या नागपूर महानगरपालिका अपनी स्कूलो को मा.सदस्यो को उनके प्रभाग के अनुसार दत्तक दे सकती है क्या ? ताकि वह लोग उन स्कूलो की देखरेख कर सके केअरटेकर बन सके। अब हमारे पास केअरटेकर बनने के बाद सबसे बडा विषय आता है कि स्कूल के अंदर बच्चो को पढाने के लिये टिचर की अपाईटमेंट करना। मा.दयाभैया की कोशिश की वजह से क्लॉक अवर वाईज टिचिंग स्टॉफ लिया गया है, उसी की तर्ज पर क्या हम मॉन्टेसरी के टिचरो को के.जी. वन, के.जी.टु या पहिली क्लास की कक्षा के लिये क्लॉक अवरस वाईज या फिक्स पे पर या मानधन के उपर उनको वहां पर अपाईट करके एक अच्छा एज्युकेशन अपनी बच्चो को देने की सुविधा नागपूर महानगरपालिकेद्वारा नही कर सकते है क्या ? इसके लिये मैंने एक सूझाव दिया कि हम नागपूर महानगरपालिका मे पिछले साल के बजेट मे सब नगरसेवको से सुखा कचरा और गिला कचरा के लिये दो-दो लाख रूपये उनकी वार्ड निधी से ले सकते हैं, घर घर मे कचरे का एक एक डब्बा पहोंचाना है जब हम घर घर मे कचरे का एक एक डब्बा पहोंचाने की जिम्मेदारी अपनी समझते है तो मा.महापौरजी,घर घर मे शिक्षा को पहोंचाने की जिम्मेदारी हमारी नही है क्या ? वार्ड निधी का कुछ हिस्सा एज्युकेशन के स्तर को बढ़ाने के लिये दिया जा सकता है क्या ? यहा मुझे जो जवाब मिला कि सॅलेरी छोडकर बाकी चिजो के लिये आप खर्च कर सकते है, सॅलेरी छोडकर बाकी सारी चिजो पर तो खर्च महानगरपालिका करती है लेकिन सबसे बडी समस्या है कि पढाने वाले टिचरो को मानधन कौन देगा। यह प्रावधान नागपूर महानगरपालिका मे किस तरीके से लाया जा सकता है, यह प्रश्न बहोत महत्वपूर्ण है इसलिये मा.महापौरजी, मैं यह चाहता हूँ कि कोई न कोई ऐसा प्रोव्हीजन बनता होगा कि एक एक मा.सदस्यो के वार्ड निधी से दो दो लाख रूपये अगर एक साल का निकाला गया तो स्कूल को चलाने के लिये लगभग 8-10 लाख रूपयो का खर्च आता है सबसे पहले तो हमको अंग्रेजी माध्यम की जो स्कूले चलती है वह लोग जो मार्केटींग करते है वह तरीका अपनाकर नागपूर महानगरपालिका के स्कूलो की मार्केटींग करनी पडेगी। उसमे जो खर्चा आयेगा वह नागपूर महानगरपालिका को देना होगा। तब जाकर हम अपने शिक्षा का स्तर बढ़ा सकेगें। मा.महापौरजी, आज तो हमारे देश के प्रधानमंत्रीजी का सपना है कि डिजीटल इंडिया, यह डिजीटल इंडिया बनाने के लिये सबसे ज्यादा अगर किसी चिज की जरूरत है तो वह निधी की है।

श्री.दिलीप दिवे :- पाईट ऑफ इंफार्मेशन, मा.महापौरजी, मा.सदस्यांनी जो प्रस्ताव ठेवलेला आहे, त्याच्यामध्ये माझे असे मत आहे कि, आपल्या ज्या महानगरपालिकेच्या शाळा बंद आहे, त्या बंद शाळा मी ज्यावेळेस पाहिल्या ब-याच शाळा आपल्या चांगल्या आहे. पण आज त्या बंद आहे. आणि नागपूर शहरामध्ये अश्या ब-याच संस्था आहे, ज्या संस्था नागपूर महानगरपालिका आणि प्रायव्हेट शाळा असे कोलॅब्रेशन करुन इंग्रजी माध्यमच्या शाळा चालवु शकतो. असा एक प्रस्ताव तयार करुन व मधला मार्ग काढुन नागपूर महानगरपालिकेने कमीत कमी बंद शाळेमध्ये इंग्रजी माध्यमाच्या शाळा

उघडाव्यात.

महापौर :- मा.सदस्य, श्री मो.जमाल यांना प्रश्नाचे उत्तर लिखितस्वरूपात दिलेलेच आहे त्यांची शाळेच्या संदर्भात जी कळकळ येथे व्यक्त केलेली आहे, मी त्यांच्या मताशी संपुर्ण सहमत आहे, नगरसेवकांनी त्यांच्या प्रभागातील शाळेचा पालकतत्व घेणे जरूरीचे आहे, आणि आपली जबाबदारी आहे कि शाळेमध्ये मा.सदस्यांनी जावून शाळा कशा चालु आहे ते बघितले पाहिजे. आणि तुमच्या ज्या काही सूचना असेल त्या सांगितल्या पाहिजे. श्री.मो.जमाल यांचे उत्तर लिखित स्वरूपात देण्यात यावे

प्रश्न क्र. 64:- मालमत्ता कर आकारणीसाठी नेमण्यात आलेल्या मे. सायबरटेक कंपनीच्या कर्मचाऱ्यांची संख्या, नावे व शिक्षण संदर्भात प्रश्न

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, मी प्रश्न क्र 64 संदर्भात बोलत आहे आपण या आधी अत्यंत चांगला न्याय दिला माझा शेवटचा प्रश्न आहे. प्रश्नाचे उत्तर मला मिळले आहे. सायबर टेक कंपनीच्या 283 कर्मचाऱ्यांची यादी संलग्न केली आहे. व त्यामध्ये सायबर टेक कंपनीच्या कर्मचाऱ्यांची शैक्षणिक पात्रता नमुद केली आहे. माझा स्पेसीफीक प्रश्न असा आहे की कर आकारणी साठी शैक्षणिक पात्रता कुठली असली पाहिजे या संदर्भात प्रशासनाने उत्तर दयावे.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, मा.सदन, सध्या मालमत्ता कर व कर आकारणी विभागात जे असेसमेंट केले जाते, एक तर तेथे प्रमोटेड कर निरीक्षक आहे. ते आधी टॅक्स कलेक्टर असतात त्यानंतर कर निरीक्षक होतात परंतु टॅक्स कलेक्टरची शैक्षणिक पात्रता 10 वी पास असते आणि ते प्रमोटेड झाल्यानंतर मालमत्ता कराचे निर्धारण करते

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, किती वर्षानंतर टॅक्स कलेक्टरचे प्रमोशन होते.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, 3 वर्षानंतर प्रमोशन होते.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, 3 वर्षानंतर त्या कर्मचाऱ्यांना कामकाजाचा अनुभव झालेला असतो. आपण जेव्हा खाजगी कंपनीला काम दिले तेव्हा आपण त्यामध्ये शैक्षणिक पात्रता कर्मचारी नियुक्तीसाठी नमुद केली होती काय?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, आर.एफ.पी. मध्ये शैक्षणिक पात्रता नमुद केलेली नाही.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, म्हणजे 5 वी पास माणुस सुध्दा ते काम करू शकते.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, शैक्षणिक पात्रतेचा जो डाटा आहे तो मिनीमम 10 वी पास नुसार कर्मचारी आपण घेतले आहे. त्यांना अगोदर ट्रेनिंग दिलेले आहे. प्रशासनाकडुन सायबर टेक कंपनीला ट्रेनिंग दिले आणि सायबर टेक कंपनीने त्या लोकांना ट्रेनिंग दिलेले आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, आपण जे ट्रेनिंग दिले ते कायद्याच्या अनुषंगाने म्हणजे आपली जी कर आकारणीची प्रक्रीया आहे त्या अनुषंगानेच ट्रेनिंग दिले असेल.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, कर आकारणी करण्याचा अधिकार हा सायबर टेक कंपनीला दिलेला नाही.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, आपल्या कायद्यामध्ये कर योग्य क्षेत्रफळ किती असले पाहिजे हे आपल्या कायद्यामध्ये आहे.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, ठराव क्र. 72 जो पारीत झालेला आहे. त्यामध्ये बांधकामाचे क्षेत्रफळ म्हटले आहे म्हणजे प्लिंथ ऐरियाचे क्षेत्रफळ मोजणे आणि आता जो नविन ठराव पारीत झाला 30 डिसेंबरला त्यामध्ये 20 टक्के वजा करणे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, या अनुषंगाने माझा प्रश्न असा आहे की महानगरपालिकेचे टॅक्स बायलॉज अस्तित्वात आहे काय?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, जेव्हा सी.एन.सी. अॅक्ट अस्तित्वात होता त्या अंतर्गत टॅक्स बायलॉज होते. त्यानंतर ठराव क्र 72 झाल्यानंतर ते बायलॉज रद्द करण्यात आले.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, ठराव क्र 72 अन्वये जे टॅक्स बायलॉज रद्द करण्याचा जो ठराव झाला त्याला शासनाची मान्यता मिळाली आहे काय?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, शासनाकडे सादर केलेला आहे. परंतु शासनाकडुन

उत्तर आलेले नाही.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, म्हणजे अजुनही मान्यता अप्राप्त आहे. जो पर्यंत टॅक्स बायलॉज रद्द करण्याची मान्यता शासनाकडून मिळत नाही तो पर्यंत जुने टॅक्स बायलॉज आपले प्रोटेक्टेट आहे की नाही?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम मध्ये आणि ठराव क्र 72 यामध्ये जी पध्दत दिलेली आहे, ही पध्दत मालमत्ता कर आकारणी करता सफीशीएंट आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, माझा प्रश्न असा आहे की, शासनाच्या मंजूरी प्राप्त होईपर्यंत जुने टॅक्स बायलॉज अस्तित्वात आहेत काय ? आपल्या कायद्याप्रमाणे त्याला प्रोटेक्शन मिळाले आहे काय?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, त्या बघल निगम सचिव सांगु शकेल.

श्री.अविनाश ठाकरे :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन, एम.एम.सी. अॅक्ट लागु झाल्यानंतर एम.एम.सी. अॅक्टचे सेक्शन लागू झालेले आहे. आणि त्यानुसारच आपण पुढची कारवाई करू.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, सी.एन.सी. अॅक्ट मधील टॅक्स बायलॉज आपण प्रोटेक्टेट केले होते ही गोष्ट खरी आहे काय?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, ठराव क्र 72 नुसार ते बायलॉज रद्द करण्यात आले आणि महाराष्ट्र महानगरपालिका अॅक्ट लागु झाल्यानंतर...

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, बायलॉज रद्द झाले आहे हे म्हणणे मेश्राम साहेबांचे चुकीचे आहे. आपले टॅक्स बायलॉज अजुन पर्यंत जिवंत आहे. जर शासनाची मान्यता मिळाली नाही तर ते बायलॉज जिवंत आहे ते संपलेले नाही.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, ते बायलॉज सभागृहाने रद्द केले आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, सभागृहाने रद्द केल्यानंतरही जो पर्यंत शासनाची मान्यता मिळत नाही तो पर्यंत ते बायलॉज अस्तित्वात राहतात की नाही.

श्री.अविनाश ठाकरे :- मा.महापौरजी, ज्यावेळी एम.एम.सी. अॅक्ट लागू झाला अॅक्ट मध्ये एक सेक्शन आहे. त्या अॅक्टमध्ये सेक्शन नुसार सभागृहाने घेतलेले निर्णय ते आपण लागु करू शकतो. त्या सेक्शनचे वाचन करण्यात यावे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, माझे म्हणणे ऐवढेच आहे शासनाची मंजूरी प्राप्त न झाल्यामुळे अजुनही तो बायलॉज अस्तित्वात आहे.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, या अनुषंगाने माझे सबमिशन असे आहे. एम.एम.सी. अॅक्ट लागु झाला आहे. त्यामध्ये जे सेक्शन दिले आहे. त्या इतक्या सफीशिएंट आहे की मालमत्ता कराचे निर्धारण करू शकतो त्यामुळे बायलॉजला हे सेक्शन सुपरसिस्ट करतो.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, बायलॉजला सेक्शन सुपरसिस्ट करतो हे मान्य आहे. मात्र जुने बायलॉज रद्द करण्याचा आपण ठराव घेतला त्याला अजुनपर्यंत शासनाची मान्यता मिळाली नाही. नविन बायलॉज करण्याची गरज भासत नाही असे आपले म्हणणे आहे. कारण जुने अॅक्ट आणि रुल्स हे सफीशिएंट आहे. त्यामुळे नव्याने बायलॉज करण्याची आवश्यकता नाही. मात्र जो पर्यंत ते बायलॉज अस्तित्वात आहे जो पर्यंत शासनाची मान्यता मिळत नाही. तो पर्यंत जुन्या बायलॉज प्रमाणे आपल्याला कर निर्धारण करावे लागेल. अनेक अपीलांच्या संदर्भामध्ये कोर्टाने सुध्दा असे निकाल दिले आहे. जुन्या टॅक्स बायलॉज प्रमाणे आपण कर निर्धारण केले पाहिजे, म्हणुन माझा प्रश्न असा आहे. सायबर टेकच्या कर्मचाऱ्यांना आपण बिल्टअप क्षेत्र काढा, म्हणुन सांगतो. आता सेलडीड वर किती क्षेत्र राहते. दोन प्रकारचे बिल्ट अप क्षेत्र असतात. एक लिहले जाते बिल्ट अप आणि दुसरे लिहिले जाते सुपर बिल्टअप, मग आपण ट्रेनिंगमध्ये काय सांगितले की बिल्टअप प्रमाणे कर आकारणी करायची की सुपर बिल्टअप प्रमाणे कर आकारणी करायची.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, अॅक्चुअल मेजरमेंटवर कर आकारणी करायचे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, असे कितीतरी उदाहरणे देवु की जशाच्या तसा सुपर बिल्टअप ऐरिया घेतला त्यांनी अॅक्चुअल मेजरमेंट केलेले नाही. जर अॅक्चुअल मेजरमेंट केलेले नाही तर सुपर

बिल्टअप क्षेत्राप्रमाणे त्यांनी कर निर्धारण केले, त्याच्यामधुन आधी 15 टक्के आणि आताच्या ठरावाप्रमाणे 20 टक्के जुन्याप्रमाणे त्यांनी 15 टक्के वजा केले. या संदर्भात एक छोटेसे उदाहरण सांगतो की, लोकांना कसा चुकीचा भुर्दंड बसत आहे. 50 चौ.मी. चा बिल्टअप प्लॅन आहे. त्याचा सुपर बिल्टअप ऐरिया विक्रीपत्रामध्ये दिलेला आहे 50 स्केअर मिटर बिल्टअप ब्रॅकेटमध्ये लिहले आहे 72 स्केअर मिटर सुपर बिल्टअप आता कर निर्धारणामध्ये आपण 50 चौरस मिटर बिल्टअप क्षेत्र धरायचे की 72 चौरस मिटर सुपर बिल्टअप क्षेत्रफळ धरायचे.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, मला एक सबमीशन करायचे आहे की सायबर टेक कंपनीला ॲक्चुअल मेजरमेंट घ्यायचे आहे. आणि ॲक्चुअल मेजरमेंट मधुन 20 टक्के मायनस करायचे आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, मेश्राम साहेबांनी जरी त्यांना अशाप्रकारचे दिशानिर्देश दिलेले असतील तरी सायबर टेक कंपनीने 72 चौरस मिटर सुपर बिल्टअप क्षेत्रफळ पकडलेले आहे. ज्यामधुन त्यांनी 15 टक्के मायनस केले आता 20 टक्के वजा केले आहे ते जर त्यातुन वजा केले तर 57.60 चौरस मिटर त्याच्यावर कर योग्य क्षेत्रफळ निर्धारित होत आहे. कायद्याप्रमाणे व तुमच्या म्हणण्याप्रमाणे किती असायला पाहिजे 50 चौरस मिटर मधुन 20 परसेंट मायनस तर 40 चौरस मिटर क्षेत्रफळावरच त्याला कर लागायला पाहिजे होता. मात्र प्रत्यक्षात 57.60 चौरस मिटरवर कर लागला. मा.महापौरजी, शैक्षणिक पात्रता विचारण्यामागचा मुळ हेतु हा होता. की आपण त्यांना ट्रेनिंग दिले काय? ते सक्षम आहे काय? अशा प्रकारच्या पध्दतीने अनेक लोकांना मालमत्ता पत्रक गेलेले आहे. 50 चौरस मिटरच्या क्षेत्रफळाच्या फ्लॅटमध्ये अतिरिक्त क्षेत्रफळाचा त्यांना टॅक्स लागला आहे. या संदर्भात किती उदाहणे सांगितली तर आपण तपासणी कराल,

श्री.अविनाश ठाकरे :- मा.महापौरजी, पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन, सायबर टेक कंपनीने 3 लाख 82 हजार प्रॉपर्टीचा सर्व्हे केला आणि 1 लाख 96 हजार प्रॉपर्टीची डिमांड दिली. बाकीच्या प्रॉपर्टी आपण चेक करीत आहे. त्यानंतर सुध्दा झोनशाहा आपण नागरिकांना आव्हान करुन अपील करीत आहे की ज्या ज्या ठिकाणी आपल्याला असे वाटत असेल की आपल्यावर अतिरिक्त कर आलेला आहे. त्या संदर्भात आपण अपिलमध्ये या आणि त्या अपिलच्या अनुषंगाने सुनावणी करुन त्याचा टॅक्स दुरुस्तीचे काम महानगरपालिकेचे चालु आहे. जेव्हा जेव्हा चेंजेस होतात तेव्हा आपण 100 टक्के आपण बरोबर आहे त्यामध्ये आपण जावु शकत नाही. काही चुका या मानवी असतात काही मशीनच्या असतात, त्यामुळे मा.प्रफुल्लजींच्या जवळ जे काही उदाहरणे असतील त्यांनी आम्हाला द्यावे आणि त्यामध्ये ज्या काही चुका झालेल्या असतील त्या दुरुस्त करुन निश्चितपणे ग्राहकांना आम्ही त्यामध्ये संतोष देवु.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, सन्माननिय सभापती, कर आकारणी यांनी पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन घेतले होते त्यांनी कर आकारणीच्या पध्दतीवर या ठिकाणी विवेचन केले. माझा स्पेसीफीक प्रश्न प्रशासनाला असा होता की या संदर्भामध्ये जर स्पष्टता नाही. अनेक ठिकाणी चुकीच्या पध्दतीने डिमांड चालल्या आहे. चुकीच्या पध्दतीने क्षेत्रफळ कॅलकुलेट होते याच्यावर नियंत्रण करणारी आपल्याकडे काही यंत्रणा आहे काय? ज्या प्रॉपर्टीचे आपण मेजरमेंट केले आहे त्या प्रॉपर्टीचे क्रॉस व्हेरीफिकेशन करण्याची काय यंत्रणा आपण उभी केली आहे.

श्री.अविनाश ठाकरे :- पॉइंट ऑफ इन्फॉर्मेशन मा.महापौरजी, मी माझ्या निवेदनातुन स्पष्टपणे सांगितले आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- पॉइंट ऑफ ऑर्डर मा.महापौरजी, माझा जो प्रश्न आहे तो स्पेसीफिकली मेश्राम साहेबांना आहे. मेश्राम साहेबांचे उत्तर मा.सभापती श्री.अविनाश ठाकरे यांनी देण्याची काही आवश्यकता नाही.

श्री.प्रविण दटके :- मा.महापौरजी, या सगळ्या विषयावर आपण एक सभागृह घेतले आहे. त्या दिवशी सगळे मुद्दे आपण घेतले आहे. त्या दिवशी सांगोपांग चर्चा झाली त्या दिवशी आपण निर्णय पण घेतले आहे त्याची माहिती पण प्रशासनाने त्यांना द्यावी आणि यापुढे आपण कोणती कार्यवाही करणार आहोत ते पण सांगावे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, माझा प्रश्न 30 तारखेला झालेल्या सभेच्या संदर्भात नाही. आपण जे काही निर्णय घेतले त्यावरही माझा काही आक्षेप नाही. माझा प्रश्न असा आहे की हे जे असेसमेंट झालेल्या प्रॉपर्टीला क्रॉस चेक करण्यासाठी आपण यंत्रणा उभी केली आहे काय? किती प्रॉपर्टीच्या मागे आपण क्रॉस चेक करणार आहोत?

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, सायबर टेक कंपनी जी सर्व्हे करीत आहे त्या संदर्भात जी असेसिंग जी अथॉरिटी आहे ती ऐरिया वाईज डिव्हिड केली आहे. सायबर टेकनी सर्व्हे केलेला डाटा हा असेसिंग अथॉरिटीच्या इनबॉक्स मध्ये जातो. त्याला असेसिंग अथॉरिटी त्याला चेक करते, त्याला अप्रुव्हल देते त्याला ई-गव्हर्नन्सच्या डिटॅक्स मॉड्युल मधुन ए.एल.व्ही चे कॅलकुलेशन होवुन त्याचे टॅक्स असेसमेंट होते.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, महानगरपालिकेचा जो संबंधित कर्मचारी असेल त्याने ते चेक केली असावी असे आपण गृहीत धरायचे. एखादया वस्तीमध्ये सर्वच्या सर्व चुका झालेल्या असतील तर त्याच्यावर आपण काय कार्यवाही करणार आहोत.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, हा सर्व डाटा पब्लीक डोमेन मध्ये घालत आहे. त्यासोबत आपण 15/2 ची नोटीस पण इशु करीत आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, 15/2 च्या नोटीस बघल आपण नाही बोलले तर जास्त सोयीचे होईल. 15/2 च्या नोटीस शिवाय तुम्ही डिमांड कशी जनरेट करू शकता.

सहा.आयुक्त (श्री.मेश्राम) :- मा.महापौरजी, आता आम्ही जी रिवाईज डिमांड देत आहे त्याच्यासोबत 15/2 ची नोटीस देत आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, मुळात हाच प्रश्न चुकीचा आहे. 15/2 च्या नोटीस सोबत आपण डिमांड देत आहे. म्हणजे येथे कायदा पाळायचाच नाही. सन्माननिय दटके साहेब महापौर असतांना त्यांनी हे पुस्तक प्रकाशित केले होते. त्यामध्ये प्रक्रीया दिली आहे. मी छापलेली प्रक्रीया नाही आहे. कर निर्धारणेच्या प्रक्रीयेमध्ये 15/2 च्या नोटीस मध्ये लिहले आहे. ज्या अन्वये एखादया मालमत्तेची पहिल्यांदाच कर आकारणी पुस्तिकेमध्ये नोंद झालेली असेल किंवा मालमत्तेचे वार्षिक भाडे मुल्य ठरविण्यात आले अशा बाबतीत आयुक्तांनी घरमालक किंवा रहिवाशाला कर आकारणी बाबत तक्रार दिल्याच्या किंवा नोटीस दिल्याच्या तारखेपासुन 21 दिवसाच्या आंत कार्यालयात तक्रार सादर करता येईल अशी विशेष नोटीस दिली पाहिजे. एखादया मालमत्तेची कर आकारणी पुस्तिकेत नोंद झाली. कर आकारणी पुस्तक आपण केव्हा तयार केले.?

महापौर :- प्रश्नोत्तराचा वेळ संपलेला आहे.

श्रीमती आभा पांडे :- मा.महापौरजी, मी एक स्थगन प्रस्ताव लावलेला आहे. त्या स्थगन प्रस्तावासंदर्भात मी आपणांस निवेदन करते की या स्थगन प्रस्तावाचे येथे वाचन करावे.

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, माझा औचित्याचा मुद्दा आहे. सभागृहाच्या बाहेर कंत्राटदार आंदोलन करीत आहे. आम्हाला पैसे मिळालेले नाही आणि महानगरपालिकेचे काम त्यामुळे खोळंबलेले आहे. अनेक नगरसेवकांचे कामे प्रलंबित आहे. म्हणुन माझी आपणांस विनंती आहे की, कंत्राटदारांचे भुगदान आपण नियमानुसार त्वरीत करावे.

महापौर :- मा.सदस्या आभा पांडे यांनी जो स्थगन प्रस्ताव येथे दिला आहे त्याचे वाचन करण्यात यावे.

निगम सचिव :- मा.महापौरजी, मा.सदस्या सौ.आभा पांडे यांनी सभा कामकाज नियमावली 1 (क) अन्वये स्थगन प्रस्ताव सादर केलेला आहे. हा स्थगन प्रस्ताव याप्रमाणे आहे. आज दि. 03/02/2018 च्या सभेमध्ये सभा कामकाज नियमावली 1 (क)अन्वये खालील विषयावर निर्णय घेण्याकरीता सभा कामकाज नियमावली 1 (य) च्या मुद्दा क्र 2 मध्ये स्पष्ट दिले आहे की असा प्रस्ताव ज्यावर सार्वजनिक निकडीच्या व महत्वाच्या गोष्टीकरीता मर्यादीत असावा या नियमाच्या अनुषंगाने मी हा स्थगन प्रस्ताव सभागृहासमोर ठेवत आहे. काल प्रभाग क्र.21 अंतर्गत येणा-या शांतीनगर घाटाचे मी निरीक्षण केले असता माझ्या समोर घाटाच्या सुविधेपायी एक हृदयविदारक क्षण आले ते असे होते की घाटाच्या ओट्यावर प्रेताला जाडण्यात येते, तेथे जवळ जवळ 2 फुटाचे

गड्डे प्रत्येक ओटयावर झाले आहे. त्यामुळे ज्या प्रेताला माझ्यासमोर जाळत होते ते प्रेत लाकुड जाळल्यानंतर त्या खड्डयात अडकला आणि प्रेताच्या कुटुंबाचे लोक सळाखीने प्रेताला वर आणुन जाळण्याचा प्रयत्न करीत होते जे मी पाहू शकले नाही. एक मेलेल्या व्यक्तीला सुध्दा सुविधेअभावी शेवटचा निरोप त्या कुटुंबाला देता आले नाही. हे दुःख सभागृहासमोर ठेवुन दुस-या प्रेतांच्या कुटुंबावर ही वेळ येवू नये या करीता स्थगन प्रस्ताव मा.सदस्या आभा पांडे नगरसेविका

महापौर :- या प्रस्तावाचे वाचन आपण सर्वांनी ऐकलेले आहे. यामध्ये मी प्रशासनाला निर्देश देते की घाटाच्या ज्या समस्या आहे त्या विहित कालावधीच्या आत पुर्ण कराव्यात, स्थगन प्रस्ताव फेटाळण्यात येत आहे.

(मा.सदस्या श्रीमती आभा पांडे यांनी सभात्याग केला)

ठराव क्रमांक 164:- म.न.पा. ठराव क्र. ७९ दि. १९.०८.२०१७ नुसार महानगरपालिकेच्या व्यवस्थापनेखाली असलेल्या मौजा-गोरेवाडा येथील सर्व्हे क्र.१०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर.जागा, सर्व्हे क्र.११३ मधील एकूण ०.६५ हे.आर.जागेपैकी ०.२८ हे.आर.जागा, सर्व्हे क्र.११८ मधील २.९७ हे.आर. जागा, सर्व्हे क्र.११९ मधील ०.०१ हे.आर. जागा, सर्व्हे क्र.१२० मधील ०.३३ हे.आर.जागा, सर्व्हे क्र.१२१ मधील १०.४४ हे.आर.जागा व सर्व्हे क्र.१२२ मधील ०.०२ हे.आर.अशी एकूण २५.५७ हे.आर.जागा गोरेवाडा प्राणी संग्रहालय प्रकल्पाकरीता महाराष्ट्र वन विकास महामंडळ नागपूर ला हस्तांतरण करण्यास महानगरपालिकेची हरकत नसल्याची मंजूरी प्रदान करण्यात आली आहे.

सदर जागेसंदर्भात सर्व्हे क्र.११८ मधील जागा हि २.९७ हे.आर. नसून २.९७ एकर म्हणजेच १.२० हे. आर. असल्याची बाब निदर्शनात आली आहे.त्यामुळे हस्तांतरीत करावयाची एकूण जागा १.७७ हे. आर ने कमी होत आहे.या जागेची पूर्तता हि सर्व्हे क्र.१०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर.ऐवजी यामध्ये १.७७ हे.आर. अधिकची जागा मिळून १३.२९ हे.आर. जागा हस्तांतरीत करून होऊ शकेल. त्यामुळे सदर ठरावात सर्व्हे क्र.११८ मधील २.९७ हे.आर. ऐवजी १.२० हे. आर. जागा व सर्व्हे क्र. १०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर.ऐवजी १३.२९ हे.आर. जागा अशी दुरुस्ती करण्यास मंजूरी प्रदान करण्याचा प्रश्न विचारात घेतला

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, हा विषय मंजूर करायला काही हरकत नाही.

श्री.जगदीश ग्वालवंशी :- मा.महापौरजी, गोरेवाडा की जमीन पर फाईव्ह स्टार हॉटेल बन रहे है मैं उस संदर्भ मे सुझाव देना चाँहता हूँ। यह जगह नागपूर शहर की सबसे महत्वपूर्ण जगहा थी। वहापर पुर्व नगरसेवक जो थे वहापर मिटींग लेते थे। इस जगह मे 3 भाग मे पाणी का साठा है। और एक साईड मे पुर्व भाग जो है वहापर खुला हुआ है। अपनी 25 हेक्टर जगहा गोरेवाडा कॅचमेंट ऐरिया मे दे रही है। जो की बरसों से अपने नागपूर शहर मे जो गोठे या तबेले है वहापर शिफ्ट करने के बारें मे अपनी समिती भी बनी थी। उस समिती मे श्री.प्रफुल्ल गुडधे भी थे, और मा.सदस्य श्री.दिपक पटेल भी सदस्य थे। और बरसों से मौजा गोरेवाडा की जो जमिन थी वह जमिन तबेले की लिये राखीव थी। वहापर गुंठेवारी कायदेके अंतर्गत वहापर लेआउट बसे गयें। मौजा वाठोडा और मौजा गोरेवाडा के बारे मे यहापर निगम आयुक्त श्याम वर्धने यहापर आये थें। 2012 मे उन्होंने एकसुत्री कार्यक्रम रखा था। तबेले वालो को निस्तनाभुत करना और तबेले वालोंवर एफ.आय.आर. दर्ज करना। हमको यहासे उखाडकर फेकना उस वक्त महापौर अपने अनिलजी सोले थे। जेष्ठ नगरसेवक श्री.दयाशंकर तिवाराजी ने अपने बजट भाषण में नंदग्राम मे नागपूर शहरके जितने भी तबेले है उसका प्रस्ताव बजट भाषण मे रखा था। मैं आपसे कहना चाहूंगा की यह जो जगहा है। यह जगह गोरेवाडा कॅचमेंट ऐरिया से लगकर है। वहापर जो घास है उसकी आय महानगरपालिका को मिलेंगी वह जो घास है वह जलकर राख हो गयी है। वह एक राष्ट्रीय प्रॉपर्टी है। वहापर जो घास थी उसमे पशु को आहार मिलेंगा और गोरेवाडा जंगल के किनारे होने के कारण बरसों से हमारी जो डिमांड रही है तबेलो की किसीका धंदा उजाडणा एक राष्ट्रीय अपराध मे आता है। और यही काम नागपूर महानगरपालिका कर रही थी। हमारे महापौर श्री. अनिलजी सोले और श्री. दयाशंकर तिवारी इन्होंने उसका विरोध किया। गुडधे पाटील ने भी उसका विरोध किया। तबेलो को

जब तक स्थायी जगह नहीं मिलेंगी तब तक यह तबेले वहासे हटेंगे नहीं। उसके बाद मेरा दूसरा प्रश्न है की की गोरेवाडा की जगहा से नागपूर शहर की जनता को पाणी पिलाने के लिये वहाकी बस्तिया उजाडी गयी, और वहापर तलाव का निर्माण किया गया। और अपने संविधान मे लिखा है। पुजा पाठ करना हमारा एक संविधानिक अधिकार है। वहापर जो हनुमान मंदीर था वह शिप्ट किया गया, माधव नगर यहा बसा हुआ है। वहापर चार मंदीर है। वहापर जाने के लिये फॉरेस्ट वाले मना कर रहे है। जो की वहापर जाने के लिये हमारी पर्यायी व्यवस्था करनी चाहिये। और किसी भी पुजा पाठ करने वाले व्यक्ती को रोकना नहीं चाहिये ऐंसा आप सर्कुलर निकालकर वहा देना चाहिये, ऐंसा मे आपको निवेदन करता हूँ। तलाव के पास मे एक हनुमान मंदीर है, मकरधोबडा के बाजु में मंदीर है। और जुना पानी वहापर भी एक हनुमान मंदीर है। और एक आदिवासी समाज का कुवारा भिमसेन का एक मंदीर है। ऐंसे 4 मंदीर है वहापर लोग जाते है। हमको जो संविधानिक अधिकार मिला है उसको खंडित किया जा रहा। मंदीर का गेट 24 घंटा खुला रहना चाहिये। ऐंसा सर्कुलर भेजकर फॉरेस्ट विभाग को आदेश दिया जाये। गोरेवाडा डेव्हलपमेंट हो रहा है। गोरेवाडा तलाव हमने बावनथडी प्रकल्प के आधार पर जो अपनी सेकडो साल पुरानी अपने ताबे की जमिन उनको दिया है और उनको सक्त बताया है की केवल आपको पौधे लगाना है। और जो भी डेव्हलपमेंट वहापर करना है। उसका नागपूर शहर की जनता को उसका आभास होना चाहिये की फॉरेस्ट विभाग को वहापर जमिन केवल पौधे लगाने के लिये दिया है। 1997 से यह बात हम सभागृह मे रख रहे है। ताकी इतनी बडी जो प्रॉपर्टी है की गोरेवाडा उत्तर मे 1 हजार 64 हैक्टर जमिन गोरेवाडा उत्तर का दिये है। और गोरेवाडा दक्षिण का 854 हेक्टर जमिन है। नागपूर शहर की जनता को अधिकार है, नागपूर शहर की नगरसेवकों का जो अधिकार है। उसका हनन फॉरेस्ट वाले कर रहे है। हमारा प्रशासन हमारे कायदे का पालन नहीं कर रहा है। गोरेवाडा उत्तर मे बडी तेजी से डेव्हलपमेंट का काम चालु है। वहा के पौधे उखाडकर फेक रहे है। नागपूर महानगरपालिका को विश्वास मे न लेते हुये अपना काम कर रहे है जो की अपना जो अंग्रीमेंट हुआ है उसमे सिर्फ पौधे लगाने का काम वह कर सकते है। दुसरा काम नहीं कर सकते। गोरेवाडा के जो नियम है उसका वाचन किया जाये। अपने नागपूर शहर के पानी का प्रश्न है। जिसके लिये 12 गाव उजाडे गये है। गोरेवाडा के तालाब का पानी किस तरह शुध्दीकरण हो उसका अंग्रीमेंट मे पुरी जानकारी दि है उसका सभागृह मे वाचन किया जाये।

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी, वाचन करण्यास काय हरकत आहे. सभागृहातील सर्व सन्माननिय नविन सदस्यांना ते कळेल.

निगम सचिव :- मा.महापौरजी, जलप्रदाय विभाग येथील गोरेवाडा दक्षिण

1. घास काटने का ठेका 1.8.86 से 31.3.1987 तक रहेगा
2. इस ठेके मे, नीचे दर्शाये हुए क्षेत्र शामिल नहीं है और इन क्षेत्रों की घांस ठेकेदार नहीं काटेगा.
 - (अ) पानी की फैलाव से 100 मिटर का क्षेत्र.
 - (ब) सडको और नालों के 20 मिटर दोनों तरफ का क्षेत्र.
 - (क) डाक बंगला और उसके कंपाउन्ड का क्षेत्र.
 - (ड) बगीच्या या बालकों के खेलने की जगह.
 - (इ) बांध का क्षेत्र.
 - (फ) गोरेवाडा पंपिंग स्टेशन और काटोल रोड को जोडने वाली सडक का पुर्वीय क्षेत्र.
 - (ज) गोरेवाडा पंपिंग स्टेशन से डाक बंगले के रोड को जोडने वाली सडक और बांध के बिच का हिस्सा, वेस्ट वेअर तक है.
3. ठेकेदार इस बात का ध्यान रखेगा की कॅचमेंट ऐरिया का तार और कॅचमेंट ऐरिया के अंदर जो झाड है इन्हे ठेके की अवधी मे कोई नुकसान न हो. यदी कोई नुकसान हुवा तो उसके भरपाई की जिम्मेदारी ठेकेदार पर होगी. और निगम कानुनी कारवाई करेगी.

4. ठेकेदार को बैलगाड़ी या कोई भी जानवर बांध पर से जाने का अधिकार नहीं होगा और ना किसी दुसरों को ले जाने देंगा.
5. ठेकेदार कॅचमेंट ऐरिया मे घांस ले जाते समय इस बात का ध्यान रखेंगा की वह या उसके नौकर ऐसा कोई काम ना करे जिससे की कॅचमेंट ऐरिया मे किसी भी प्रकार की गंदगी हो जोकि स्वास्थ्य के लिये हानीकारक हो.
6. ठेकेदार कोई झोपडा या गंजी (हिप) कॅचमेंट ऐरिया मे नही बनायेंगा या बनाने देगा.
7. ठेकेदार जानवर या कोई आदमी उसके चौकीदार को छोडकर कॅचमेंट ऐरिया मे नही रहने देंगा.
8. ठेकेदार इस ऐरिया मे किसी प्रकार की खदान नही लगायेंगा और ना लगाने देंगा तथा इस बात का भी ध्यान रखेंगा की कॅचमेंट ऐरिया से बोल्टर और मुरुम न ले जाया जाये. यदी गया तो उसकी नुकसान भरपाई भी ठेकेदार पर ही रहेंगी.
9. यदि महानगर पालिक किसी दुसरे ठेकेदार को वृक्ष काटने या कोई दुसरा काम देतो उसे अपने काम करने से नही रोकेंगा.
10. ठेकेदार को जानवरो का गोबर आदि हटाने का प्रबंध शिघ्रतीशिघ्र करना होंगा अन्यथा महानगरपालिका अपने तरफ से काम करवाकर ठेकेदार से उसका खर्च वसूल करेंगी.
11. ठेकेदार कोई भी जानवर कॅचमेंट ऐरिया मे चरने के लिये नही छोडेंगा
12. कार्यपालन यंत्री (जलप्रदाय) या कोई दुसरा अधिकारी जिसे निगम आयुक्त अधिकार दें, वह क्षेत्र में किसी भी समय निरीक्षण कर सकेगा.
13. ठेकेदार ने तारीख 31.3.87 के पहले घांस काटकर बाहर निकालना चाहिए. उस तारीख के बाद जो भी घांस क्षेत्र मे होगी उसपर महानगरपालिका की मालकी होगी.
14. यदि अंगार या किसी दूसरे कारणोंसे नुकसान हुआ तो उसकी भरपाई की जिम्मेदारी निगम पर नही रहेंगी.
15. ठेकेदार को घांस काटने वाले मजदुरोंके लिये (टेम्पररी) अस्थायी संडास बनाने होंगे, और उनकी सफाई के लिये सफाई मजदुर रखना होंगा
16. निम्न राशी नगर जमा करने वाले व्यक्ती ही बोली बोल सकते हैं, गोरेवाडा (दक्षिण) रुपये 10,000.00 (दस हजार)
17. यदि ठेके की अवधी मे महानगरपालिका को ठेकेदार से कोई आर्थिक नुकसान पोहचा तो उस नुकसान की भरपाई ठेकेदार की अनामत रक्कम मे से काटली जायेंगी
18. यह ठेका तारीख 31.3.87 को अपने आप खत्म हो जायेगा इसकी पुर्व सूचना या इतल्ला देने की जिम्मेदारी महानगरपालिका पर नही रहेंगी. ठेकेदार तारीख 31.3.87 को क्षेत्र का कब्जा खुद कार्यपालन यंत्री जलपद्राय विभाग या अन्य नियुक्त अधिकारी को सौपना होगा. ऐसा न करने पर उसकी अनामत रक्कम जप्त हो जायेगी.
19. उपरोक्त शर्तो मे से किसी भी शर्त का उल्लघन, जो की निगम की दृष्टी से अयोग्य है, या किसी कार्य से जो की निगम को नुकसानदायक है, तो मा.निगम आयुक्त को वह ठेका रद्द करने का पूर्ण अधिकार होगा. जो भी घांस क्षेत्र मे या गंजियों मे होगा, उसे जप्त कर निगम की और से उसे बेचकर, पैसा वसूल करने का अधिकार होगा.
20. मा.निगम आयुक्त को बगैर कोई कारण दर्शाए, ठेके को नामंजूर करनेका अधिकार है.
21. इस ठेके में या इस करारनामें की शर्त के बारे में कोई मतभेद होनेपर मा.निगम आयुक्त का निर्णय अंतिम रहेगा तथा ठेकेदार को मान्य करना ही होगा.
22. निलाम खत्म होने की उच्चतम बोली बोलनेवालो को ठेकेकी पुरी रक्कम तुरंत भरना होगा. ठेकेदार को 10.00 रुपये के स्टॅम्प पेपर पर करारनामा होगा तथा उस करारनामें खर्च भी ठेकेदार को ही वहन करना होगा.
अ) महानगर पालिकाके कोईवार्ड के लिये 30.3.87 तक 500 क्विंटल घांस बिनामुल्य, अतिक्रमण विभाग के इडेन्टके अनुसार देना पडेगा.

23 महानगर पालिका के ठराव क्रमांक 22 दि. 30.7.85 अनुसार गोरेवाडा दक्षिण पाणलोट क्षेत्र वन विभाग (महाराष्ट्र शासन) के स्वाधीन करनेका ठराव पारित किया है वह ठराव के अनुसार वन विभाग के अधिकारी और कर्मचारी योंको इस क्षेत्र मे प्रवेश करने तथा उन के काम करने मे ठेकेदार रुकावट नही करेगा।

ठेकेदार की सही
और
पुर्ण पत्ता :-

कार्यपाल यंत्री (जलप्रदाय)
नागपूर महानगरपालका नागपूर

श्री.जगदीश ग्वालवंशी :- मा.महापौरजी, कुल 22 प्रश्न थे की गोरेवाडा का पानी दुषित न हो, उसपर आप ध्यान दे। आज अपने पास जो जमिन बची है उसको आप और दोंगे क्या ?।

महापौर :- हा राज्य शासनाचा विषय आहे.

श्री.जगदीश ग्वालवंशी :- मा.महापौरजी, फॉरेस्ट को जमिन देकर अभी जो अपने पास बची हुयी है वो भी जमिन आप राज्य शासन को देंगे क्या।

श्री.तानाजी वनवे :- मा.महापौरजी विषय क्र. 118 मध्ये दि. 30.07.1985 ला ही जमीन सोशल फॉरेस्टला केवळ महानगरपालिकेने पोलुशन मुक्त शहर व्हावे म्हणुन दिली होती. त्या जागेवर कोणी अतिक्रमण होवु नये आणि फक्त झाडे लावण्यासाठी दिली होती. परंतु ध चा मा करुन ती जागा या ठिकाणी ही जागा आपण मोठा व्यवसायिक प्रकल्प बनविण्यासाठी आपण देत आहे. या ठिकाणी ही जागा आपण कशासाठी देत आहे हे सभागृहातील ब-याच सदस्यांना माहिती नाही. या ठिकाणी पर्याटनाचा मोठा प्रोजेक्ट तयार होत आहे. त्या ठिकाणी फाईव्ह स्टार होटेल, प्रेस क्लब, क्लब हाउस अशा प्रकारच्या वेगवेगळ्या सोयी त्या ठिकाणी तयार होत आहे. त्यापासुन करोडो रुपयांचे उत्पन्न त्या कंत्राटदाराला होणार आहे. म्हणुन माझी आपणास विनंती आहे की हा जो ठराव आहे ही महानगरपालिकेची 321 कोटी रुपयांची आपली जमिन आहे आणि 99 कोटी रुपयांची बंजर जमिन आपल्याला मोबदल्यामध्ये देणार आहे. मा.मुख्यमंत्र्यांनी सांगितले होते की आपण स्वतःच्या बलबुत्यावर आपण सर्व चालवा आपली जमिन शासनानी घ्यायची त्यांनी प्रोजेक्ट तयार करायचा त्यांनी प्रोजेक्ट तयार करुन त्याचा हिस्सा महानगरपालिकेला मिळाला पाहिजे. माझी आपणांस विनंती आहे की जे तेथुन उत्पन्न येईल त्या उत्पन्नाचा अर्धा पैसा हा महानगरपालिकेला सुध्दा मिळाला पाहिजे. नाहीतर या विरुद्ध लोक पी.आय.एल. टाकतील कोर्टामध्ये जावुन या विषयावर स्टे आणतील म्हणुन त्यामध्ये महानगरपालिकेचा सहभाग ठेवावा आणि सहभाग ठेवुन हा विषय मंजूर करावा.

श्री.हरीश ग्वालवंशी :- मा.महापौरजी, यह जगहा महानगरपालिका की है और महानगरपालिका के पास ही रहने को होना। महानगरपालिका से 'ए' ग्रेड की जगहा लेकर महानगरपालिका को बी ग्रेड की जगह दे रहे है। वहापर फाईव्ह स्टार हॉटेल बनने वाला है तो वहाका पानी दुषित होंगा। पाणी दुषित होंगा तो शहर की जनतापर अन्याय होंगा। मा.महापौरजी मेरा आपके मार्फत एक निवेदन है वह जमिन महानगरपालिका की है और महानगरपालिका के पास ही रहने चाहिये।

श्री.मोहम्मद जमाल :- मा.महापौरजी, विषय क्र 118 इस विषय का हमारी और से कई विरोध तो नही है, लेकिन नागपूर महानगरपालिका की यह जो जगह है। यह जगह नागपूर महानगरपालिका की आवक का जरिया बन सकती है इसिलिये मैं सभागृह के माध्यम से आपको कहना चाहता हूँ यह जगह को लिज पर दिया जायें या फिर इस जगह को रेंट पर दिया जायें। महानगरपालिका की आवक है जो इस जगह से बनी रहें ऐंसा ठराव मे डालकर ठराव मंजूर किया जायें। यह मेरा आपसे निवेदन है।

श्री.संदीप जोशी :- मा.महापौरजी, विषय क्र 118 मध्ये साधकबाधक चर्चा झालेली आहे आणि या बदल कोणाचेही दुमत असण्याचे कारण नाही की महानगरपालिकेची जागा आपण महाराष्ट्र शासनाला देत असतांना त्यामध्ये नागपूर महानगरपालिकेचा देखील फायदा आपण बघितला पाहिजे

आणि त्यानुसार मागच्या वेळेस ठराव मंजूर केला आहे यामध्ये नागपूर महानगरपालिकेला देखील मोठया प्रमाणात हिस्सा मिळणे अत्यंत आवश्यक आहे. त्या अनुषंगाने मा.सदस्य श्री.जगदीश ग्वालबंशी, मा.सदस्य श्री. हरीश ग्वालबंशी यांनी दिलेल्या सुचनांचा देखील यामध्ये समावेश व्हावा, त्याच धर्तीवर मी देखील एक सुचना आपणांस देत आहे याचा देखील समावेश करुन या विषयाला मंजूरी दयावी.

वरील चर्चेनंतर म.न.पा. ठराव क्र. ७९ दि. १९.०८.२०१७ नुसार महानगरपालिकेच्या व्यवस्थापनेखाली असलेल्या मौजा-गोरेवाडा येथील सर्व्हे क्र.१०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर. जागा, सर्व्हे क्र.११३ मधील एकूण ०.६५ हे.आर.जागेपैकी ०.२८ हे.आर.जागा, सर्व्हे क्र.११८ मधील २.९७ हे. आर. जागा, सर्व्हे क्र.११९ मधील ०.०१ हे.आर. जागा, सर्व्हे क्र.१२० मधील ०.३३ हे.आर.जागा, सर्व्हे क्र.१२१ मधील १०.४४ हे.आर.जागा व सर्व्हे क्र.१२२ मधील ०.०२ हे.आर.अशी एकूण २५.५७ हे.आर.जागा गोरेवाडा प्राणी संग्रहालय प्रकल्पाकरीता महाराष्ट्र वन विकास महामंडळ नागपूर ला हस्तांतरण करण्यास महानगरपालिकेची हरकत नसल्याची मंजूरी प्रदान करण्यात आली आहे.

सदर जागेसंदर्भात सर्व्हे क्र.११८ मधील जागा हि २.९७ हे.आर. नसून २.९७ एकर म्हणजेच १.२० हे. आर. असल्याची बाब निदर्शनात आली आहे.त्यामुळे हस्तांतरीत करावयाची एकूण जागा १.७७ हे. आर ने कमी होत आहे.या जागेची पूर्तता हि सर्व्हे क्र.१०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर.ऐवजी यामध्ये १.७७ हे.आर. अधिकची जागा मिळून १३.२९ हे.आर. जागा हस्तांतरीत करुन होऊ शकेल. त्यामुळे सदर ठरावात सर्व्हे क्र.११८ मधील २.९७ हे.आर. ऐवजी १.२० हे. आर. जागा व सर्व्हे क्र. १०६ मधील एकूण १९.५५ हे.आर.जागेपैकी ११.५२ हे.आर.ऐवजी १३.२९ हे.आर. जागा अशी दुरुस्ती करण्यास मंजूरी प्रदान करण्याचा प्रश्न विचारात घेवून नागपूर महानगरपालिकेचे मौजा वाठोडा येथील २८.४८ एकर व

मौजा - तरोडी (खुर्द) येथील अंदाजीत ११२.२९ एकर अशी एकूण अंदाजीत १४०.७७ जागा राष्ट्रीय क्रीडा केंद्र व प्रशिक्षण संस्था स्थापन करण्याकरीता भारतीय क्रीडा प्राधिकरणाला ३० वर्षांचे कालावधी करीता हस्तांतरीत करण्याबाबत मनपा ठराव क्र २५७ दि.१८/०४/२०१६ अन्वये तसेच शासन निर्णय दि. ११ जुलै २०१७ अन्वये मंजूरी प्राप्त आहे.

भारतीय क्रीडा प्राधिकरणाला दयावयाचे जागेतील विविध भागात सद्यस्थितीत २५० ते ३०० बांधकामे करण्यात आली असल्याची माहिती आहे. हि अतिक्रमीत बांधकामे काढण्याकरीता नेहरुनगर झोन कार्यालयामार्फत नोटीस/पत्र इत्यादी दिले असता यापैकी ब-याच बांधकाम धारकांकडे जागेचे विक्रीपत्रे/कब्जापत्रे असल्याची बाब निर्देशनास आली आहे. महानगरपालिकेने दिलेल्या नोटीस मुळे आता या सर्व बांधकाम धारकांवर बेघर होण्याची वेळ आली आहे. वास्तविक या बांधकाम धारकांची यात काहीच चुकी नाही. ही जागा नागपूर सुधार प्रन्यास मार्फत मुळ जमिन मालकांना अवार्डद्वारे मोबदला देवुन संपादित करण्यात आल्यानंतर शासनाकडुन महानगरपालिकेला हस्तांतरीत करण्यात आली आहे. परंतु या जागांच्या मालमत्ता पत्रकात महानगरपालिकेची नोंद न झाल्याने या जागांची अवैध विक्री करण्यात आलेली आहे. ही बाब जरी सत्य असली तरी सद्याचे बांधकाम धारकांपैकी ज्यांचेकडे मालकीबाबत कायदेशीर कागदपत्रे जसे विक्रीपत्र इत्यादी आहे त्यांनी जागा विकत घेतलेली आहे हे स्पष्ट आहे. त्यामुळे एका अर्थी त्यांची फसगत झाली आहे.

त्यामुळे या अशा बांधकाम धारकांवर झालेला अन्याय लक्षात घेता भारतीय क्रीडा प्राधीकरणाला दयावयाचे जागेपैकी बांधकाम धारकांना किती जागा लागेल ते आयुक्तांनी ठरवावे व त्या जागेत निवासी अभिन्यास तयार करुन त्यातील भुखंड वाटप करुन अशा बांधकाम धारकांचे पुनर्वसन करण्यात यावे, तसेच १४०.७७ एकर जागेपैकी पुनर्वसन अभिन्यासाकरीता आवश्यक असलेली जागा वगळुन उर्वरीत जागा राष्ट्रीय क्रीडा केंद्र व प्रशिक्षण संस्था स्थापन करण्याकरीता भारतीय क्रीडा प्राधीकरणाला हस्तांतरीत करण्याचे अधिकार आयुक्तांना देण्यात येते या मा.सत्तापक्ष नेते श्री.संदीप जोशी यांनी दिलेल्या लेखी सूचना व सदस्य यांनी केलेल्या सूचनेसह हा विषय मंजूर करण्यात येतो या मा.महापौरजी यांनी केलेल्या घोषणेस सभागृहाने मंजूर मंजूरच्या

आवाजाने एकमताने मान्यता प्रदान केली.

महापौर:- विषय क्र 125 आणि विषय क्र 134 दोन्ही विषय एकत्र पुकारण्यात येते.

ठराव क्रमांक 165:- नागपूर महानगरपालिका क्षेत्रातील महानगरपालिकेचे मालकीच्या जागेवरील शासन राजपत्रान्वये घोषित 1) रामबाग, 2) बोरकर नगर, बसोड मोहल्ला, 3) गुजर नगर, 4) मेहतरपूरा, 5) सुदर्शन नगर, 6) तकिया धंतोली, 7) तकिया धंतोली (सरस्वतीनगर) झोपडपट्टी अंतर्गत पात्र झोपडपट्टीवासीयांना पट्टे वाटप करण्याकरिता महाराष्ट्र महानगरपालिका अधिनियम 1949 कलम क्र. 79(ग) व सुधारणा अध्यादेश दि. 13 जुन 2017 मधे नमुद नुसार राज्य शासन कडुन निश्चित करण्यात येईल असे अधिमुल्याचे अनुषंगाने महाराष्ट्र शासन गृहनिर्माण विभागाचे शासन निर्णय क्र. गवसु 1201/प्र.क्र.9/झोपसु 1, दि. 10 जुलै 2002 व सुधारित शासन निर्णय क्र. गवसु 2016/प्र.क्र. 86/झोपनि-2, दि. 3 जानेवारी 2017 मध्ये ठरवुन दिल्याप्रमाणे अधिमुल्य आकारुण पात्र झोपडीवासीयांना महानगरपालिका लादिल अटी व शर्तीस अधिन राहुन, तीस वर्षाहुन अधिक होणार नाही. इतक्या मुदतीकरिता पट्टेवाटप करण्यास्तव शासनाची मंजूरी प्राप्त करुन विहित अटी व शर्तीच्या अधिन राहुन पट्टेवाटपाची प्रक्रिया करण्याकरिताचे अधिकार मा. आयुक्त यांना प्रदान करण्याचा प्रश्न सभागृहाने विचारात घेवुन त्यास मंजूर मंजूरच्या आवाजाने एकमताने मान्यता प्रदान केली.

श्री.धर्मपाल मेश्राम :- मा.महापौरजी, नागपूर शहरातील झोपडपट्टयांना मालकी हक्कांचे पट्टे वाटण्याचा अत्यंत जिद्दाळयाचा प्रश्न आहे. आणि मा.आयुक्तांना मालकी हक्काचे पट्टे वाटण्याचा अधिकार देण्याचा ठराव आहे. मला याच्यामध्ये काही सुचना करायच्या आहे. खरोखर नागपूर शहराची लोकसंख्या आहे त्याच्या जवळपास एक तृतीयांश लोकसंख्या ही झोपडपट्टयांमध्ये राहते. आणि या झोपडपट्टया ज्या आहे त्या 4 प्रकारच्या संस्थांच्या मालकीच्या जागेवर वसल्या आहे. त्यातील एक म्हणजे नागपूर महानगरपालिका आहे. दुसरे नागपूर सुधार प्रन्यास आहे. तिसरे नझुल आहे. आणि चौथे प्रायव्हेट लॅन्ड आहे. नागपूर महानगरपालिका ही संपुर्ण नागपूर शहरात नियोजन प्राधिकरण आहे. नागपूर सुधार प्रन्यास बरखास्तीच्या मार्गावर आहे. त्यामुळे मा.आयुक्तांना मोठया प्रकारचे अधिकार दयायचे असल्याने अत्यंत जिद्दाळयाचा हा प्रश्न आहे. यामध्ये प्रायव्हेट लॅन्डचे मालकी हक्काचे पट्टे वाटप करतांना माझी सभागृहाला विनंती आहे की जे प्रायव्हेट लॅन्डचे ओनर आहे त्यांना टी.डी.आर. देण्याचे अधिकार मा.आयुक्तांना देण्यात यावे. प्रायव्हेट लॅन्डचे पट्टे वाटप करतांना त्यामध्ये सूचना अटी आणि शर्ती लादण्यात आलेल्या आहेत त्या मध्ये माझी अशी सूचना आहे. की प्रायव्हेट लॅन्डचे पट्टे वाटप करतांना प्रायव्हेट लॅन्ड ओनरला टि.डी.आर देण्यात यावा आणि त्या जागेवर असलेल्या झोपडपट्टीधारकांना याच पध्दतीने मालकी हक्काचे पट्टे देण्यात यावे. हा जो दुरुस्तीचा विषय आहे तो शासनास पाठविण्यात यावा अशी माझी विनंती आहे. आणि या सोबतच 134 क्रमांकाचा जो विषय आपण क्लब केला आहे. त्यामध्ये 10 क्रमांकाची जी अट आहे. पार्टी क्र 2 म्हणजे ज्याला आपण मालकी हक्काचे पट्टे देत आहे तो त्याला त्या जागेत पोट भाडेकरु ठेवता येणार नाही. ही जी अट आहे ती गाळण्यात यावी. कारण की एका झोपडीधारकाला जर 2 किंवा 3 मुले असतील तर त्यांचे भविष्यामध्ये आपोआपच 2 हिस्से होतील, त्यामुळे ही अट गाळण्यात यावी अशी माझी विनंती आहे. त्याचप्रमाणे 13 क्रमांकाच्या अटीमध्ये भाडे पट्टयाचा करार पंजीबध्द करण्याकरिता जो स्टॅम्प ड्युटीचा जो खर्च आहे आणि पंजीयन शुल्क आहे तो नियमानुसार घेण्यात यावा असे म्हणण्यात आले आहे. माझी सभागृहाला विनंती आहे. या संदर्भात मी आपणांस एक उदाहरण देवु इच्छितो टेलिफोन एक्सचेंज चौक चा जो परिसर आपण पाहिला तर तेथील रेडीरेकनर चे भाव 7000 स्केअर फुटपेक्षा जास्त आहे त्याच्याबाजुला आदर्श झोपडपट्टी आहे. जर आपण 7000 रु वर्गमीटरच्या रेडीरेकनरच्या भावानी स्टॅम्प ड्युटी आणि पंजीयन शुल्क जर आपण घेतले तर जवळपास 1000 रुपयांच्या झोपडयाला 6 लक्षापेक्षा जास्त हे पंजीयन शुल्क आणि स्टॅम्प ड्युटी लागेल. यामध्ये माझी एक अशी विनंती आहे की पंजीयन शुल्क आणि स्टॅम्प ड्युटी माफ करण्यात यावी, नाही तर अत्यंत जुजबी स्वरुपात घेण्याची आपण शासनाला सूचना करावी.

श्री.नरेंद्र (बाल्या) बोरकर :- मा.महापौरजी विषय क्र 125 माझ्या प्रभागात सुदर्शन नगर आणि मेहतरपुरा यामध्ये आलेला आहे. परंतु या मेहतरपुरा-यामध्ये एक समाजभवन आहे. त्या समाजभवनामध्ये अतिक्रमण करून घर बांधले आहे. एका महानगरपालिकेच्या कर्मचा-यांनी समाजभवनामध्ये गड्डा केला आणि तिथे घर बनविले आणि तेथे स्लॅप टाकला आणि जेव्हा आपला सर्व्हे झाला त्यामध्ये त्याचे नाव पट्टे वाटपाच्या यादी मध्ये ते नाव घेण्यात आले आहे. मी आपणामार्फत विनंती करतो की, त्या व्यक्तीचे नाव वगळण्यात यावे, सुदर्शन नगरमध्ये एक गल्ली आहे तिथे दोघातिघांनी झोपडे टाकून आपला कब्जा केला आहे. ती खाली करण्यात यावी, आपण या दोन्ही बाबींकडे लक्ष द्यावे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, या विषयाच्या अनुषंगाने झोपडपट्टी वासियांना महानगरपालिकेच्या मालकीच्या ज्या जागा आहे त्यांना पट्टे वाटप करायचे आहे. पट्टे वाटप करीत असतांना आपण दि. 03 जानेवारी 2017 च्या शासन निर्णयाचा या ठिकाणी उल्लेख केला यामध्ये एस्सी, एस.टी, आणि आर्थिक दुर्बल घटकांवर अधिक आकारणी न करता पट्टे वाटप करण्याचा निर्णय आहे आणि दुसरीकडे आपण करारनाम्यामध्ये एकत्रित सेवा शुल्क आकारण्याचा येथे अटी व शर्तीच्या दुस-या क्रमांकावर आपण केला आहे. दि. 01.01.1995 पासून वसुल करावयाचे एकत्रित सेवा शुल्क ऐवढे आहे. जर आपण अधिमुल्य आकारणार नसेल तर सेवाशुल्क वेगळा आहे काय?

कार्यकारी अभियंता, स्लम (श्री.जांभुळकर) :- मा.महापौरजी, शासन निर्णय 2002 मधला आहे आणि अमेंडमेंट जी आहे ती 3 जानेवारी 2017 ची आहे. त्यामध्ये जी अधिमुल्य आहे ती निश्चित आहे परंतु जो एकत्रित शुल्क आहे तो आपल्या शासन निर्णयामध्ये दिलेला आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, माझे म्हणण्याचे तात्पर्य जे आहे की सर्वांना या संदर्भात माहिती झाली पाहिजे. नाहीतर झोपडपट्टीवासियांना वाटत आहे की फुकट पट्टे वाटप होत आहे. मला पण असे वाटत आहे की येथे फुकट पट्टे वाटप होत आहे परंतु येथे कंडीशन ज्या आहे त्या वेगळ्या आहे. शासन निर्णयामध्ये लिहीले आहे की पट्टे वाटप करतांना शुल्क झोपडपट्टी वासियांकडून वसुल करून एकत्रित शुल्क स्थानिक स्वराज्य संस्थांनी भरना करावे व पुर्नवसन योजना राबविल्यानंतर वसुली संबंधी झोपडपट्टी धारकांकडून वसुल करण्यात यावी, यामध्ये तफावत आहे.

कार्यकारी अभियंता, स्लम (श्री.जांभुळकर) :- मा.महापौरजी, 3 जानेवारी 2017 च्या शासन निर्णयामध्ये तसे नमुद आहे.

श्री.प्रफुल्ल गुडधे :- मा.महापौरजी, नेमके आपण किती रुपये झोपडपट्टी धारकांपासून वसुल करणार आहे हा माझा प्रश्न आहे. 30 वर्षांच्या भाडेपट्टयासाठी झोपडपट्टी धारकांपासून किती रक्कम यामध्ये सेवा शुल्क असो किंवा अधिमुल्य असो यापैकी कुठली रक्कम वसुल करणार आहोत.

कार्यकारी अभियंता, स्लम (श्री.जांभुळकर) :- मा.महापौरजी, 225 स्केअर फुट पर्यंत 50 रुपये आहे. 10 जुलै 2002 च्या शासन निर्णयानुसार त्याव्यतिरिक्त जास्तीचा जो ऐरिया आहे त्याला 50 परसेंट पर स्केअर फुट आहे.

यानंतर राष्ट्रगित होवून सभेची कार्यवाही अनिश्चित काळाकरिता स्थगित करण्यांत आली.

निगम सचिव
नागपूर महानगरपालिका, नागपूर

महापौर
नागपूर महानगरपालिका, नागपूर

